पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय 1

पौलुस का कारावास

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1
पृष्ठभूमि..1
गिरफ्तारी से पूर्व घटित घटनाएं...2
यरुशलेम में गिरफ्तारी...3
कैसरिया में कारावास...6
रोम में कारावास 9
सुचारु सेवकाई 10
प्रेरितों के काम...11
कष्टों के बारे में जानकारी..11
उद्देश्य की जानकारी 12
आशीष की जानकारी...13
कलीसियाओं को पत्र 13
प्रचार...13
प्रार्थना..14
कष्ट...15
लेखन...17
धर्मवैज्ञानिक एकता 18
सृष्टि का राजा..18
सर्वोच्चता...19
सम्मान 19
दृढ़ संकल्प... 20
मसीह के साथ संयोजन..22
नैतिक जीवन..23
राजा के रूप में मसीह 24
मसीह के साथ संयोजन 25
उपसंहार.. 26

पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्याय एक

पौलुस का कारावास

परिचय

इंग्लैंड के बेडफोर्ड में 1675 में प्रसिद्ध प्योरिटन प्रचारक और लेखक जाँन बनियन को बिना लाइसेंस के सार्वजनिक रूप से प्रचार करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया, और उसे छः महिनों के लिए कारागृह में डाल दिया गया। इससे पूर्व उसने 12 वर्ष कारागृह में बिताए थे, जिस दौरान उसने अनेक पुस्तकें और छोटी पुस्तिकाएं लिखीं। अत: एक बार पुन: बंदी बनाए जाने को उसने एक बड़ी त्रासदी के रूप में समझने की अपेक्षा आशावादी रूप में देखा।

कहा जाता है कि उसने उस समय इस प्रकार कहा, “मैं अपने लेखनों से काफी दूर रहा हूँ, शायद यह मेरे लिए कारागृह नहीं परन्तु एक कार्यालय के समान है जहां से मैं मसीह के संदेश को पूरी दुनिया में फैला सकता हूँ।”

चाहे ये बनियन के कहे गए सटीक शब्द हों या नहीं, कारागृह में बिताई गई इस अल्पावधि के दौरान उसकी सेवकाई अकाट्य रही। इसी समय के दौरान उसने द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस (जिसके हिन्दी अनुवाद को मसीही मुसाफिर नाम दिया गया है) नामक पुस्तक लिखी जो मसीही जीवन का रूपकीय वर्णन है और संभवत: अंग्रेजी भाषा में लिखी गई सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है।

अब, हम सबको उसकी प्रशंसा करनी चाहिए जो कारागृह में रहकर भी मसीह के लिए इतना सब कुछ करता है। परन्तु जाँन बनियन का कार्य जितना महत्वपूर्ण साबित हुआ है, प्रेरित पौलुस के कार्य ने उससे कहीं अधिक अर्जित किया है। कैसरिया और रोम में अपने चार वर्षों के कारावास के दौरान उसने कुछ पत्रियां लिखीं जो बनियन की पुस्तक द पिलग्रिम्स प्रोग्रेस से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं।

यह हमारी श्रखंला “पौलुस की कारावास से लिखी पत्रियां” का पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम पौलुस की उन पत्रियों का अध्ययन करेंगे जिन्हें सामान्यत: “कारावास से लिखी पत्रियां” कहा जाता है। ये विभिन्न कलीसियाओं और लोगों को लिखी पौलुस की वे पत्रियां हैं जो उसने तब लिखीं जब वह मसीह की सेवा की खातिर कारागृह में था। हमने इस अध्याय का शीर्षक “पौलुस का कारावास” दिया है। इस अध्याय में हम उन परिस्थितियों पर ध्यान देंगे जो कुलुस्सियों, फिलेमोन, इफिसियों और फिलिप्पियों को लिखी पौलुस की पत्रियों का कारण बनीं।

पौलुस के कारावास की हमारी चर्चा तीन मुख्य विषयों को संबोधित करेगी : पहले हम पौलुस के कारावास, पहले कैसरिया में और फिर रोम में, की पृष्ठभूमि पर ध्यान देंगे। दूसरा, पौलुस के कारावास के दौरान उसकी सतत् सेवकाई का अध्ययन यह देखते हुए करेंगे कि कैसे उसने बंधनों में रहने के दौरान भी मसीह के प्रेरित के रूप में सेवा करना जारी रखा। और तीसरा हम कुछ ऐसे विषयों पर अधिक ध्यान देते हुए “कारावास से लिखी पत्रियों” की धर्मविज्ञानीय एकता की जांच करेंगे जो उन सब में समान पाए जाते हैं। आइए हम पौलुस के कारावास की पृष्ठभूमि के साथ आरंभ करें।

पृष्ठभूमि

पहले तो हमें इस बात का उल्लेख करना चाहिए कि विद्वान पौलुस के कारावास के स्थान, जब उसने कुलुस्सियों, फिलेमोन, इफिसियों, और फिलिप्पियों को पत्रियां लिखीं, के विषय में विभाजित मत

रखते हैं। कुछ मानते हैं कि उसने कैसरिया से लिखीं तो अन्य मानते हैं कि रोम से। इस अध्याय में हमारा तर्क यह होगा कि पौलुस ने ये पत्रियां रोम से लिखीं, यद्यपि ये विवरण हमारी किन्हीं भी व्याख्याओं के लिए महत्वपूर्ण नहीं होगा। फिर भी, चूंकि जानेमाने विद्वान इन विषयों पर असहमत हैं, इसलिए हमें इन दोनों नगरों में उसके द्वारा बिताए गए समय पर चर्चा करनी चाहिए।

पौलुस के कारावास की हमारी पृष्ठभूमि की जांच उसकी गिरफ्तारी से ठीक पहले घटी घटनाओं के सर्वेक्षण के साथ आरंभ होगी। उसके बाद हम यरुशलेम में उसकी गिरफ्तारी के समय की घटनाओं की जांच करेंगे, और फिर कैसरिया में उसके आरंभिक कारावास की। अंत में, हम रोम में उसके बाद के कारावास की ओर मुड़ेंगे। आइए सबसे पहले उसकी गिरफ्तारी से पहले की घटनाओं को देखें।

गिरफ्तारी से पूर्व घटित घटनाएं

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा की लगभंग समाप्ति के समय, शायद सन् 56 या 57 ईस्वी के दौरान, पौलुस और उसके साथी शायद नाव से एशिया माइनर से यरुशलेम की ओर बढ़ रहे थे। उन्हें यरुशलेम में निर्धन मसीहियों को आर्थिक सहायता प्रदान करनी थी जो अकाल का सामना कर रहे थे। राह में वे मिलेतुस में रूके जहां पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से मुलाकात की। इस मुलाकात के दौरान पौलुस ने प्रकट किया कि पवित्र आत्मा ने उसे सचेत किया है कि जब वह यरुशलेम में पहुंचेगा तो उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

हम इन भविष्यवाणी के शब्दों को प्रेरितों के काम 20:22-24 में पढ़ते हैं :

> "मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार है। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, वरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवाकाई को पूरी करूं, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।" (प्रेरितों के काम 20:22-24)

अनेक नगरों में जहां पौलुस गया, वहां विश्वासियों ने पौलुस की गिरफ्तारी की भविष्यवाणी की थी। परन्तु पवित्र आत्मा ने पौलुस को इस कारावास की ओर बढ़ने को बाध्य किया। इसलिए पौलुस जानता था कि ये भविष्यवाणियां उसे उसके मार्ग से भटकाने के लिए नहीं बल्कि आने वाली कठिनाइयों के लिए उसे तैयार करने के लिए हैं। यरुशलेम में पौलुस के अनेक शत्रु थे, और वह जानता था कि उसके वहां पहुंचने पर उसे गिरफ्तार किया जा सकता है। परन्तु वह यह भी जानता था कि यह कष्ट उसके लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा था।

मिलेतुस से पौलुस और उसके साथी कोस को गए, फिर रूदुस को, और वहां से पतरा को। पतरा में उन्हें एक जहाज मिला जो उन्हें सूर में पहुंचने से पहले साइप्रस से होता हुआ ले गया। सूर में, पवित्र आत्मा ने और भी कई विश्वासियों को प्रेरित किया कि वे यरुशलेम में आने वाली कठिनाइयों के प्रति पौलुस को सचेत करें। परन्तु पौलुस फिर भी अपने लक्ष्य तक पहुंचने के प्रति दृढ़ था।

सूर से पूरा समुह पतुलमयिस की ओर गया, वहां से सामरिया के किनारे पर कैसरिया को। चूंकि प्राचीन जगत में अनेक नगरों का नाम कैसरिया था, इसलिए दूसरों से इसे अलग करने के लिए इस नगर को कभी-कभी "कैसरिया मारितिमा" कहा जाता है, जिसका अर्थ है "समुद्र के किनारे वाला कैसरिया"।

कैसरिया मारितिमा में अपने निवास के दौरान पौलुस को यरुशलेम को न जाने के लिए पुन: सचेत किया गया। जाने-पहचाने नाट्कीय दृश्य में भविष्यवक्ता अगबुस ने भविष्यवाणीय चिन्ह के रूप में स्वयं अपने हाथ और पांव बांध लिए ताकि वह पौलुस को सचेत करे कि यदि वह यरुशलेम गया तो उसे

गिरफ्तार करके बंदी बना लिया जाएगा। यह समझना आसान है कि क्यों पौलुस के मित्र नहीं चाहते थे कि वह गिरफ्तार हो। वे शायद पौलुस की सुरक्षा के प्रति भयभीत थे और नहीं चाहते थे कि उसे कुछ हानि पहुंचे। परन्तु पौलुस जानता था कि परमेश्वर इस गिरफ्तारी और कारावास को सुसमाचार के प्रचार में इस्तेमाल करेगा। जैसा हम प्रेरितों के काम 21:13 में पढ़ते हैं :

> परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, कि तुम क्या करते हो, कि रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो, मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिये बरन मरने के लिये भी तैयार हूँ। (प्रेरितों के काम 21:13)

पौलुस समझ गया था कि उसका आगामी कारावास "प्रभु यीशु के नाम के लिए होगा।" अर्थात् पवित्र आत्मा पौलुस के आगामी कारावास को सुसमाचार की बढ़ोतरी और कलीसिया की सेवकाई के लिए इस्तेमाल करने वाला था।

और जब पौलुस ने इन ख़तरों का सामना किया तो उसके पास पवित्र आत्मा पर भरोसा करने का अच्छा कारण था। पूर्व में उसकी द्वितीय मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस ने अपने लिए पवित्र आत्मा की संभाल को देखा था। प्रेरितों के काम 16:6-10 के अनुसार पौलुस एशिया और बितूनिया में सुसमाचार का प्रचार करना चाहता था, परन्तु पवित्र आत्मा ने उसे रोक दिया था। यद्यपि यह शायद पौलुस को अजीब लगा हो, परन्तु उसने पवित्र आत्मा की आज्ञा मानी और त्रोआस की ओर बढ़ गया।

त्रोआस में, पौलुस ने एक दर्शन देखा जिसने परमेश्वर की योजना को प्रकट किया : पौलुस को सुसमाचार मकिदूनिया में लेकर जाना था। मकिदूनिया में पौलुस का कार्य बहुत फलदायक रहा। परन्तु यदि पौलुस एशिया और बितुनिया में प्रचार करके पवित्र आत्मा की अवज्ञा कर देता तो वह मकिदूनिया में प्रचार नहीं कर पाता। इस और ऐसे कई अन्य अनुभवों से पौलुस जान गया था कि परमेश्वर रहस्यमयी तरीकों में कार्य करता है। पौलुस के लिए यह जानना पर्याप्त था कि परमेश्वर उससे क्या करवाना चाहता था, और इस बात पर विश्वास करना भी कि परमेश्वर इस कठिनाई का प्रयोग किसी अद्भुत और अप्रत्याशित कार्य करने में करेगा।

अपने भविष्य के इस सीमित ज्ञान, परन्तु परमेश्वर के आत्मा में निश्चित भरोसे के साथ पौलुस ने स्वयं को कारावास का सामना करने के लिए समर्पित कर दिया। उसने लगभग सन् 57 ईस्वी में यरुशलेम की यात्रा के साथ अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पूर्ण की। प्रेरितों के काम 20:16 के अनुसार वह लगभग गर्मी की ऋतु के आरम्भ में पिन्तेकुस्त के समय पहुंचा होगा।

यरुशलेम में गिरफ्तारी

अब जब हम पौलुस की गिरफ्तारी से पूर्व घटी घटनाओं से परिचित हो गए हैं, तो हम यरुशलेम में उसकी गिरफ्तारी से जुड़ी परिस्थितियों की जांच करने की स्थिति में हैं। यरुशलेम के अधिकारियों और पौलुस के बीच विरोध कैसे हुआ? उसे कारागृह में क्यों डाला गया?

जब पौलुस यरुशलेम पहुंचा तो वह मनासोन नामक एक विश्वासी के साथ रुका और कलीसिया ने उसका अच्छा सत्कार किया। अगले दिन पौलुस ने याकूब से भेंट की जो यीशु का भाई और नए नियम की याकूब नामक पुस्तक का लेखक था। यरुशलेम की कलीसिया के प्राचीन भी पौलुस से मिलने के लिए एकत्रित हुए।

संभवतया, इसी समय पौलुस ने कलीसिया को अकाल राहत कोष सौंप दिया था जो उसने अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान एकत्रित किया था। पौलुस की पूर्व की पत्रियों, जैसे रोमियों और 1 और 2 कुरिन्थियों, से हम जानते हैं कि पौलुस यरुशलेम के निर्धन मसीहियों की सहायता में ही नहीं बल्कि यहूदी

और अन्यजाति विश्वासियों के बीच मेल-मिलाप में इस एकत्रित धन की भूमिका के विषय में कितना गंभीर था।

पौलुस को आशा थी कि जब यहूदी मसीही अन्यजातियों से यह भेंट प्राप्त करेंगे तो उनकी कृतज्ञता उन्हें अन्यजातियों को मसीह में अपने सगे भाइयों के रूप में ग्रहण करने में उत्साहित करेगी। परन्तु प्रेरितों के काम में लूका का वर्णन अकाल राहत कोष के सौंपे जाने का उल्लेख नहीं करता। इसकी अपेक्षा, यह यरुशलेम की कलीसिया की पौलुस की सेवकाई के विषय में कुछ विषयों को दर्शाता है। संभवत: यह दर्शाता है कि यरुशलेम की कलीसिया ने अकाल राहत कोष की उतनी सराहना नहीं की जितनी पौलुस को आशा थी।

अन्यजाति के मसीहियों की उदारता और पौलुस की सेवकाई की पुष्टि करने की अपेक्षा याकूब और प्राचीनों ने पौलुस को सूचित किया कि पौलुस की शिक्षाओं और क्रियाओं के विषय में कुछ अफवाहें यरुशलेम में पहुंच चुकी थीं। खासकर यह अफवाह कि पौलुस ने अन्यजातियों के बीच रह रहे यहूदी मसीहियों को यह सिखाया था कि वे पारंपरिक यहूदी क्रियाओं, जैसे खतना, की उपेक्षा करें। अब यरुशलेम के यहूदी मसीही दृढ़ता से मानते थे कि सभी यहूदी मसीहियों को पारंपरिक यहूदी क्रियाओं का पालन करते रहना चाहिए। और याकूब तथा प्राचीन इस बात से चिंतित थे कि स्थानीय यहूदी मसीही इन अफवाहों के कारण पौलुस का विरोध करेंगे।

हमें यहां पर यह कहने के लिए रुकना चाहिए कि पौलुस के विषय में फैली ये अफवाहें झूठी थीं। अपनी सभी पत्रियों में पौलुस ने पुराने नियम में पाई जाने वाली नैतिक व्यवस्था की पुष्टि की थी। और इससे बढ़कर उसने यहूदी समुदायों को उन परंपराओं को त्यागने के लिए भी उत्साहित नहीं किया था जो उन्होंने मूसा की व्यवस्था में जोड़ दी थीं। इसके विपरीत, जब वह यहूदी समुदायों में था तो उसने स्वयं यहूदी परंपरा का पालन किया था। फिर भी, उसने यह सिखाया था कि मसीह के पुनरुत्थान के साथ एक नये युग का शुभारंभ हो गया था। और जैसा उसने अपनी पत्रियों में स्पष्ट किया था, न तो अन्यजातियों को और न ही यहूदियों को इन परंपराओं का पालन करना अनिवार्य था। मसीहियों को यहूदी परंपराओं को उच्च स्थान देना चाहिए, परन्तु गैरविश्वासी यहूदियों के मध्य सुसमाचार फैलाने के लिए ही।

सुनें 1कुरिन्थियों 9:20-21 में उसने इन विषयों पर अपनी स्थिति का वर्णन किस प्रकार किया :

> **मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊं, जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं उन के लिये मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के आधीन हैं, खींच लाऊं। व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूँ) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊं। (1कुरिन्थियों 9:20-21)**

पौलुस जब अन्यजातियों के बीच था तो वह एक अन्यजाति के समान व्यवहार करने से नहीं हिचकिचाया था। परन्तु वह सुसमाचार के लिए यहूदी परंपराओं का पालन करने में प्रसन्न था। अब, परमेश्वर ने पुराने नियम की व्यवस्था की यहूदी परंपराओं का पालन करने के लिए पौलुस को बाध्य नहीं किया था। जिस प्रकार पौलुस ने कहा, वह इन पारंपरिक रस्मों को त्यागने के लिए आजाद था। परन्तु वह मसीह में व्यवस्था की नैतिक अपेक्षाओं से मुक्त नहीं था। सारांश में, पौलुस का मानना था कि मसीह के आने से परमेश्वर की व्यवस्था के उपयोग में परिवर्तन हो गया था, परन्तु सुसमाचार की खातिर परंपराओं को बनाए रखना अभी भी स्वीकार्य था।

यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि किस प्रकार बहुत ही ध्यान से रचित इस सटीक धर्मशिक्षा को गलत समझा गया होगा, या फिर यह अफवाह क्यों फैली कि पौलुस ने यहूदियों को सिखाया था कि वे

अपनी परंपराएं त्याग दें। जैसे भी हो, याकूब और प्राचीन इसका एक समाधान लेकर आए जो उन्होंने सोचा कि यरुशलेम के यहूदी मसीहियों को संतुष्ट करेगा।

खासकर, उन्होंने सुझाव दिया कि पौलुस यरुशलेम में मन्दिर के रीति-रिवाजों में भाग लेकर मूसा की व्यवस्था के प्रति अपने समर्पण को दर्शाए। विशेषकर, उन्होंने उससे अनुरोध किया कि वह उन चार पुरुषों के साथ शुद्धिकरण की रस्मों को अदा करे जिन्होंने मन्नत मानी थी। यह व्यवस्था के प्रति पौलुस की आज्ञाकारिता और यहूदी परंपरा के प्रति उसके समर्पण को दर्शाएगा। उन्होंने पौलुस से चारों मन्नत मानने वालों से जुड़े खर्चे उठाने के लिए भी कहा जो पौलुस की पवित्रता की गहराई को दर्शाएगा।

अन्यजातियों के प्रेरित के रूप में पौलुस जानता था कि उसके कार्य उस दृष्टिकोण को प्रभावित करेंगे जिसके द्वारा यहूदी मसीही न केवल उसे बल्कि अन्यजाति के मसीहियों को भी देखते हैं। संभवत: उसकी आशा थी कि मन्नत मानने वालों की सहायता करने और अपने आपको शुद्ध करने के द्वारा वह उस लक्ष्य को हासिल कर लेगा जो अन्यजातियों की आर्थिक सहायता हासिल नहीं कर पाई थी, अर्थात् यहूदी मसीहियों द्वारा अन्यजाति के मसीहियों का गर्मजोशी से स्वागत। अत:, यहूदियों में मसीह की खातिर, और खासकर कलीसिया में यहूदियों और अन्यजातियों के मेल-मिलाप की खातिर पौलुस ने इस विषय में यरुशलेम की कलीसिया के निर्णय के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया और अपने शुद्धिकरण के सप्ताह को आरंभ किया।

शुद्धिकरण के सप्ताह के लगभग अंत में पौलुस मन्दिर के आंतरिक प्रांगण में समय बिता रहा था। मन्दिर के क्षेत्र में बाहरी और आंतरिक प्रांगण दोनों थे। बाहरी प्रांगण और आंतरिक प्रांगण को अलग-अलग करने के लिए उनके बीच एक दरवाजा था। बाहरी प्रांगण को अन्यजातियों का प्रांगण कहा जाता था क्योंकि सब जातियों के लोगों को वहां प्रवेश करने की अनुमति थी। परन्तु आंतरिक प्रांगण, अर्थात् इस्राएल का प्रांगण, केवल यहूदियों के लिए आरक्षित था। यदि कोई अन्यजाति उसमें प्रवेश करता था तो वह मृत्यु की सजा का भागीदार होता था।

जब पौलुस इस्राएल के प्रांगण में था तो एशिया माइनर के कुछ यहूदियों ने उसे पहचान लिया था। संभवतया, ये गैरविश्वासी यहूदी थे, न कि यहूदी धर्म से आए मसीही विश्वासी। पूर्व में इन्हीं यहूदियों ने पौलुस को त्रुफिमुस नामक व्यक्ति के साथ देखा थ जो पौलुस के साथ यरुशलेम आया था। अत: जब उन्होंने पौलुस को इस्राएल के प्रांगण में देखा तो उन्हें यह गलतफहमी हो गई कि त्रुफिमुस ने भी उस प्रांगण में प्रवेश किया था, और वे इससे अति क्रोधित हो गए।

इसके प्रत्युत्तर में इन यहूदियों ने पूरे नगर को पौलुस के विरुद्ध भड़का दिया और एक क्रोधित भीड़ ने उसे मार डालने के इरादे से इस्राएल के प्रांगण से बाहर घसीट लिया। परन्तु जब यरुशलेम में रोमी सेना के सेनापति को पता चला कि नगर में दंगा हो रहा है, तो वह दंगे को शांत करने हेतु फुर्ती से गया और पौलुस को बंदी बना लिया, और फिर उसे अपनी हिरासत में ले लिया। सेनापति, जिसका नाम क्लौदियुस लूसियास था, ने पहले तो भीड़ के गुस्से का कारण स्पष्ट करवाने में पौलुस को बाध्य करने के लिए उसे कोड़े लगवाने की योजना बनाई थी, परन्तु जब उसे पता चला कि पौलुस रोमी नागरिक है तो वह पीछे हट गया। रोम के नागरिक होने के नाते पौलुस को विशेष कानूनी सुरक्षा का हक था, जिसमें बिना सुनवाई न तो बंदी बनाए जाने और न ही पीटे जाने का अधिकार शामिल था।

अगले दिन लूसियास ने पौलुस के विरुद्ध लगे आरोपों का पता लगाने के लिए उसे महासभा, यहूदी शासन मण्डल, के समक्ष प्रस्तुत किया। स्पष्टत: कोई गवाह सामने नहीं आया कि त्रुफिमुस ने इस्राएल के प्रांगण में प्रवेश किया था, इसलिए पौलुस आजाद था कि वह इस बात को स्पष्ट करने के द्वारा अपना बचाव करे कि इतने सारे यहूदी उसकी शिक्षाओं से अप्रसन्न क्यों थे।

जैसे हम प्रेरितों के काम 23:6 से 8 में पढ़ते हैं :

> तब पौलुस ने यह जानकर, कि कितने सदूकी और कितने फरीसी हैं, सभा में पुकारकर कहा, हे भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूँ, मरे हुओं की आशा और पुनरूत्थान के विषय में मेरा मुकद्दमा हो रहा है। जब उस ने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई। क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरूत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी दोनों को मानते हैं। (प्रेरितों के काम 23:6-8)

पौलुस ने दावा किया किया कि सदूकियों ने उसका विरोध इसलिए किया क्योंकि वह एक फरीसी था, और जिस सुसमाचार का प्रचार उसने किया वह कई रूपों में फरीसियों की शिक्षाओं से मिलता है। वास्तव में यह सही भी था, विशेषकर पुनरुत्थान के विषय में। सदूकी मृतकों के दैहिक पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे, इसके परिणामस्वरूप उन्होंने मसीह के पुनरुत्थान के विषय में पौलुस की मसीही शिक्षा को स्वीकार नहीं किया।

पिछले दिन पौलुस ने क्रोधित भीड़ को यह स्पष्ट करने के द्वारा संबोधित किया था कि यीशु मृतकों में से जी उठा था और दर्शन में उसके समक्ष प्रकट हुआ था, और उसके सामने सुसमाचार को स्पष्ट किया था। अत: जब पौलुस ने महासभा के समक्ष कहा कि उसने पुनर्जीवित मसीह के अपने दर्शन पर आधारित सुसमाचार का प्रचार किया था तो उसे फरीसियों से कुछ सहानुभूति प्राप्त हो गई थी।

एक बार जब फरीसियों ने अनुभव कर लिया कि पौलुस ने स्वयं को एक फरीसी माना था और अनेक रूपों में वह उनकी अनेक धारणाओं से सहमत था तो वे महासभा में उसका बचाव करने लगे। परन्तु सदूकी पीछे नहीं हटे और वह बैठक हिंसात्मक हो गई। अत: लूसियास ने एक बार फिर पौलुस को अपनी हिरासत में ले लिया।

अगले दिन लूसियास पौलुस को पुन: महासभा के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता था ताकि वह उसके विरुद्ध लगे आरोपों की तह तक पहुंच जाए। परन्तु पौलुस के भतीजे ने लूसियास को सचेत कर दिया कि महासभा पहुंचने से पहले चालीस अति-उत्साही यहूदियों ने घात लगाकर पौलुस को मारने की योजना बनाई है। अब, चूंकि पौलुस रोमी नागरिक था लूसियास को उसकी सुरक्षा करना आवश्यक था। अत: उसे महासभा के समक्ष भेजने की अपेक्षा उसने पौलुस को रोम के यहूदिया क्षेत्र के राज्यपाल फेलिक्स की हिरासत में पड़ोसी नगर कैसरिया मरितिमा को भेज दिया।

अब जब हमने यरुशलेम में पौलुस की गिरफ्तारी की परिस्थितियों को देख लिया है, अब हमें यहूदिया के राज्यपाल मारकुस अन्टोनियस फेलिक्स की हिरासत में कैसरिया में उसके कारावास की ओर हमारा ध्यान लगाना चाहिए।

कैसरिया में कारावास

पौलुस के कारावास के समय के दौरान यहूदिया नामक रोमी क्षेत्र में दक्षिण में यहूदिया, मध्य में सामरिया और उत्तर में गलील नामक क्षेत्र पाए जाते थे। आपको स्मरण होगा कि कैसरिया मारितिमा सामरिया के किनारे पर था। यह रोम के यहूदिया क्षेत्र की राजधानी भी था।

जब पौलुस सबसे पहले कैसरिया में पहुंचा, शायद सन् 57 ईस्वी में, जब तक उस पर आरोप लगाने वाले यरुशलेम नहीं पहुंच गए, पांच दिनों तक उसे हिरासत में रखा गया। जो उस पर आरोप लगा रहे थे उनमें महायाजक हनन्याह, कुछ यहूदी अगुवे और तिरतुल्लुस जो उस समूह का अधिवक्ता था।

जब उस पर आरोप लगाने वाले आए तो फेलिक्स ने सुनवाई बैठाई। इस सुनवाई में तिरतुल्लुस ने तर्क दिया कि पौलुस ने शांति भंग की थी और दंगे भड़काए थे। क्योंकि यहूदिया में शांति बनाए रखने का कर्तव्य राज्यपाल फेलिक्स का था इसलिए यह उसकी दृष्टि में काफी गंभीर आरोप था। परन्तु इससे भी

अधिक महत्वपूर्ण यह था कि यहूदी दृष्टिकोण से उन्होंने मन्दिर का उल्लंघन करने का प्रयास करने का आरोप भी लगाया। वहां पर उपस्थित यहूदी अगुवों ने भी इस आरोप की पुष्टि की, परन्तु उनमें से कोई भी आधिकारिक गवाह के रूप में सामने नहीं आया।

स्पष्टत: यहूदियों ने पौलुस के विषय में फैली सभी झूठी अफवाहों पर पूरी तरह से विश्वास कर लिया था। वे इस बात से आश्वस्त प्रतीत हुए कि पौलुस यहूदी धर्म का पतन चाहता था और कि वह गर्व से मन्दिर को अपवित्र करने का प्रयास करने की बात स्वीकार कर लेगा। और इसलिए जिस एकमात्र गवाह को आरोप लगाने वाले यहूदियों ने पुकारा वह स्वयं पौलुस था।

प्रेरितों के काम 24:8 में हम तिरतुल्लुस द्वारा फेलिक्स को कहे गए अंतिम शब्दों को पढ़ते हैं :

> इन सब बातों को जिनके विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तू [पौलुस] आप ही उस को जाँच करके जान लेगा। (प्रेरितों के काम 24:8)

अब पौलुस कोई अधिवक्ता नहीं था, परन्तु उस पर आरोप लगाने वालों के प्रति उसका प्रत्युत्तर अडिग था। उसकी प्रतिरक्षा में चार मुख्य बिन्दू थे :

पहला, उसने दर्शाया कि उस पर लगाए आरोपों का कोई गवाह नहीं है। इसका अर्थ था कि उनके आरोपों का कोई आधार नहीं था। यह एक महत्वपूर्ण बिंदू था क्योंकि पौलुस पर आरोप था कि उसने दिन-दुपहरी में भीड़भाड़ के स्थान पर अपराध किए हैं। अगर वह दोषी होता तो किसी न किसी ने अवश्य देखा होता।

दूसरा, उसने सही तर्क दिया कि शांति उसने नहीं बल्कि दूसरों ने भंग की थी। दंगों की शुरुआत एशिया माइनर से आए यहूदियों ने की थी। रोमी शांति को भंग करने वाला पौलुस नहीं बल्कि यहूदी थे। इस तथ्य की पुष्टि लूसियास के पत्र ने कर दी थी जिसने आरोप लगाया था कि यहूदियों ने पौलुस को मार डालने की योजना बनाई थी।

तीसरा, उस पर आरोप लगाने वाले शायद तब हतप्रभ रह गए थे जब पौलुस ने कहा कि मन्दिर को अशुद्ध करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी। इसके विपरीत, उसने कहा कि वह पवित्र-वचनों में लिखी हर बात पर विश्वास करता है और मन्दिर में आराधना करने के लिए आया था।

चौथा, पौलुस ने न्यायालय को स्मरण करवाया कि महासभा ने उसे दोषी नहीं पाया था। यह तर्क अभियोग पक्ष के लिए काफी क्षतिपूर्ण था। न्यायसंगत यहूदी शासन मण्डल ने उसे उस पर लगाए गए आरोपों का दोषी नहीं पाया था। फिर भी वे उसे सजा दिलवाना क्यों चाहते थे?

अब, परमेश्वर के रहस्यपूर्ण विधान में, फेलिक्स एक कपटी शासक था। पौलुस पर लगे अपर्याप्त आरोपों के आधार पर फेलिक्स उसे रिहा कर सकता था। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। इसकी अपेक्षा उसने यहां व्यक्तिगत फायदे का अवसर देखा, इसलिए उसने इस मुकदमे को स्थगित कर दिया और पौलुस द्वारा उसे रिश्वत दिए जाने की प्रतीक्षा करने को प्राथमिकता दी।

लूका ने प्रेरितों के काम 24:26 में इसे स्पष्ट किया :

> (फेलिक्स) को पौलुस से कुछ रूपये मिलने की भी आस थी; इसलिये और भी बुला बुलाकर उस से बातें किया करता था। (प्रेरितों के काम 24:26)

पहले तो फेलिक्स ने कहा कि जब रोमी सेनापति लूसियास कैसरिया में आएगा तब वह पौलुस के मुकदमे का निर्णय सुनाएगा। परन्तु फेलिक्स ने पौलुस के मुकदमें को दो वर्षों तक स्थगित कर दिया।

इन दो वर्षों के अंत में फेलिक्स के स्थान पर पुरकियुस फेस्तुस को राज्यपाल बना दिया गया। जब फेस्तुस ने राज्यपाल के रूप में सन् 59 ईस्वी में अपना पद संभाला तो यहूदी विरोधियों ने पौलुस को मार डालने का एक और अवसर देखा। उन्होंने एक और षडयंत्र रचा और इस बहाने के साथ फेस्तुस से

पौलुस को यरुशलेम के हाथ सौंपने आग्रह किया कि वे उसके मुकदमे को पुन: खोलकर स्थानीय स्तर पर निपटाना चाहते हैं। अत: फेस्तुस ने एक और सुनवाई बुलाई जिसमें उसने पौलुस से पूछा कि क्या वह उसके मुकदमे की सुनवाई यरुशलेम में चाहता है या कैसरिया में।

इस बिंदू पर अपने मुकदमे की सुनवाई यरुशलेम में करवाने पर सहमत होने की अपेक्षा पौलुस ने रोमी नागरिक होने के अपने अधिकार के कारण स्वयं नीरो कैसर से अपने मुकदमे की सुनवाई करवाने का आग्रह किया, और फेस्तुस के पास इस आग्रह को स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। पवित्रशास्त्र इस आग्रह के पीछे पौलुस की विशेष प्रेरणा को तो नहीं दर्शाता है परन्तु हमारे पास कुछ विवरण हैं जो इसे स्पष्ट कर सकते हैं।

पहला, पौलुस के पास इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि यरुशलेम में सुनवाई के बाद उसे आजाद कर दिया जाएगा। उसने पहले से ही कारावास में दो वर्ष बिता लिए थे क्योंकि फेलिक्स ने उसके साथ निष्पक्ष व्यवहार नहीं किया था। उसके पास इस बात पर विश्वास करने का भी कोई कारण नहीं था कि फेस्तुस अधिक निष्पक्षता के साथ उसके मुकदमे पर निर्णय देगा।

दूसरा, पौलुस शायद उसे मार डालने के विषय में यहूदी षडयंत्र से अवगत था। प्रेरितों के काम का लेखक लूका पौलुस का मित्र था और वह कैसरिया से यरुशलेम में पौलुस के स्थानांतरण के दौरान पौलुस की हत्या करने के षडयंत्र से अवगत था। अत: हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि पौलुस को इस षडयंत्र के विषय में जानकारी थी।

तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण, जब पौलुस को लूसियास के द्वारा गिरफ्तार किया गया तो प्रभु स्वयं स्वप्न में पौलुस के समक्ष प्रकट हुआ और उसे आश्वस्त किया कि वह रोम में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए जीवित रहेगा।

जिस प्रकार हम प्रेरितों के काम 23:11 में पढ़ते हैं :

> उसी रात प्रभु ने उसके पास आ खड़े होकर कहा; हे पौलुस, ढ़ाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।
> **(प्रेरितों के काम 23:11)**

गिरफ्तारी के समय पौलुस को प्राप्त इस दर्शन ने उसे यह सोचने का कारण दिया कि उसका कारावास अंत में उसे रोम में मसीह का प्रचार करने का अवसर प्रदान करेगा। जिस प्रकार हमने देखा है कि पवित्र आत्मा ने पौलुस को पहले से ही यह विश्वास करने को प्रेरित किया था कि उसका कारावास उसकी सुसमाचार की सेवकाई को और आगे बढ़ाएगा। इस बिंदू पर उसे अनुभव हो गया कि उसका कारावास रोम में जाने के द्वार को खोलेगा।

इन कारणों की कड़ी उसके लिए पर्याप्त प्रेरणा रही होगी कि वह अपने मुकदमे की अपील कैसर से करे। उसकी प्रेरणा चाहे जो भी रही हो, एक बात अवश्य स्पष्ट है कि पौलुस अंत में रोम में सुसमाचार प्रचार करने वाला था चाहे वह कारागृह से ही क्यों न हो।

अब इससे पहले कि पौलुस को रोम भेजा जाता उसके पास यह अवसर था कि वह युवा राजा हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय के समक्ष अपने मुकदमे को स्पष्ट करे। पौलुस के तर्कों को सुनने के बाद अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा कि यदि पौलुस कैसर से अपील न करता तो उसे आजाद किया जा सकता था।

परन्तु प्रभु के मन में पौलुस के लिए कुछ बहुत ही अलग था। कुछ ऐसे कारण जो उस समय पौलुस के लिए भी अस्पष्ट थे, प्रभु ने रोम में पौलुस के कारावास को सुसमाचार के विस्तार के लिए इस्तेमाल करने की योजना बनाई थी।

कैसरिया में पौलुस के दो-वर्षीय कारावास का अध्ययन करने के पश्चात् अब हम रोम में उसके आगामी कारावास पर ध्यान देने के लिए तैयार हैं। कैसरिया से रोम की लम्बी यात्रा पर ध्यान देने के द्वारा हम आरंभ करेंगे।

रोम में कारावास

क्योंकि पौलुस रोम का कैदी था इसलिए उसे रोमी पहरेदार के अधीन लेकर जाया जाना था। अत: उसे यूलियुस नामक रोमी सेनापति के अधिकार में रखा गया और उसे एशिया माइनर जाने वाले जहाज में रखा गया। पौलुस के सहयात्री लूका और अरिस्तर्खुस को उसके साथ जाने की अनुमति दी गई।

जहाज कैसरिया से शायद 59 ईस्वी के अंतिम भाग में चला होगा। पहले वे सैदा की भूमि पर पहुंचे जहां पौलुस को उसके कुछ मित्रों से मिलने की अनुमति दी गई। सैदा से वे साइप्रस होते हुए और किलिकिया तथा पंफूलिया के किनारे-किनारे चलते हुए लूसिया क्षेत्र के मूरा बन्दरगाह पहुंचे।

मूरा में वे इटली की ओर जाने वाले जहाज में चढ़े। यहां से उन्होंने कठिन जहाजी यात्रा का अनुभव किया। वहां से वे कनीदुस पहुंचे और फिर वे दक्षिण की ओर मुड़ने को बाध्य हुए जिससे वे क्रेते को पहुंचे और फिर “शुभलंगरबारी” में जा घुसे।

क्योंकि वह सर्दी का समय था इसलिए वह मौसम जहाजी यात्रा के लिए खतरनाक बन गया था। इस समय यात्रा करने के खतरे ने पौलुस को प्रेरित किया कि वह सेनापति यूलियुस को सलाह दे कि इटली के लिए अभी तैयार न हो। यद्यपि पौलुस की ओर से अनुभवी नाविकों को सलाह देना अटपटा लगे, परन्तु यह याद रखना केवल इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि उसके पास भविष्यवाणी का वरदान था बल्कि इसलिए भी कि 2कुरिन्थियों 11:25 के अनुसार पौलुस इससे पहले तीन जहाजी दुर्घटनाओं से बचा था। पौलुस रोम में सुसमाचार प्रचार करना चाहता था। उसने यात्रा न करने की सलाह इसलिए नहीं दी कि वह रोम में अपनी सजा से बचना चाहता था परन्तु इसलिए कि वह सुरक्षित रूप से रोम पहुंचना चाहता था।

जैसे भी हो, नाव के कप्तान और मालिक ने यूलियुस को आश्वस्त कर दिया कि उनकी यात्रा सफल होगी और वे तभी यात्रा पर निकल पड़े। परन्तु कुछ ही सामय बाद वे जोरदार तुफान में फस गए जो उन्हें कौदा के पार भूमध्यसागर में कहीं दूर ले गया। तूफान दो सप्ताह तक जारी रहा, जिस दौरान पौलुस ने जहाज पर उपस्थित लोगों में सेवकाई की और उन्हें उत्साहित किया कि परमेश्वर ने उस पर प्रकट किया है कि वे सब सुरक्षित रहेंगे। अंत में जहाज माल्टा द्वीप के पास समुद्री चट्टान से टकरा गया और समुद्री लहरों से नष्ट हो गया।

जहाज के नष्ट हो जाने से नाविक, सैनिक, कैदी और जहाज के सब लोग माल्टा द्वीप पर बिखर गए। पौलुस, उसके साथी और उसके पहरेदार तीन महीनों तक माल्टा में रहे और इस समय के दौरान उनकी देखभाल द्वीप के निवासियों ने की।

माल्टा में पौलुस के निवास के दौरान कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं। एक घटना में पौलुस को जहरीले सांप ने डस लिया। स्थानीय लोगों ने पहले तो इसे एक चिन्ह के रूप में लिया कि पौलुस एक हत्यारा है, और सोचा कि वह मर जाएगा। परन्तु सांप के डसने का उस पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ा। परिणामस्वरूप लोगों ने पौलुस के विषय में अपने दृष्टिकोण को बदला और उसे ईश्वर के रूप में समझने लगे।

अब हमें दूसरे संदर्भों से ज्ञात है कि पौलुस ने स्थानीय लोगों को उसे निरन्तर रूप से ईश्वर समझने नहीं दिया होगा। उदाहरण के तौर पर लुस्त्रावासियों ने पौलुस को हरमिस देवता समझा तो पौलुस ने इसका विरोध किया और कहा कि वह एक मनुष्य मात्र है, और सुसमाचार को प्रस्तुत करने में इस अवसर का प्रयोग किया। हम उचित रूप से संभावना लगा सकते हैं कि माल्टा में भी उसने ऐसा ही किया होगा।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

पौलुस ने माल्टा में कई चमत्कारिक चंगाइयां भी कीं। उसकी चंगाई की सेवकाई तब शुरु हुई जब उसने पुबलियुस के पिता को चंगा किया। पुबलियुस माल्टा का मुख्य अधिकारी था। और जब यह समाचार फैला कि पौलुस ने पुबलियुस के पिता को चंगा कर दिया है तो द्वीप में जो कोई भी बीमार था वह पौलुस के पास आया और उसे चंगाई मिली।

तीन महीने पश्चात् 60 ईस्वी के आरंभ में शीत ऋतु समाप्त हो गई, इसलिए पौलुस और उसके साथी और पहरेदार एक बार फिर इटली की ओर चल पड़े। माल्टा से वे सिसिली के द्वीप की ओर उत्तर में गए और सुरकूसा के बंदरगाह पर उतरे। सुरकूसा से वे इटली की भूमि के दक्षिण में रेगियुम की ओर गए। जब वे रेगियुम से निकले तो तेज दक्षिणी हवा उन्हें तेजी से पुतियुली की ओर ले गई, जहाँ आस-पास के क्षेत्रों से विश्वासी पौलुस से भेंट करने को आए। एक सप्ताह के बाद पौलुस को अंत में रोम ले जाया गया। वह 60 ईस्वी के अंत में रोम पहुंचा और उसे गृहावास में रखा गया।

पौलुस 60 से 62 ईस्वी तक दो वर्षों तक गृहावास में रहा। इस समय के दौरान उसे पहरे में रखा गया परन्तु उसे मेहमानों से मिलने और आजादी से सिखाने की अनुमति थी। क्योंकि यहूदिया के यहूदी अगुवों ने रोमी यहूदियों को पौलुस के मुकदमें के विषय में सूचित नहीं किया था इसलिए रोमी यहूदियों ने पौलुस के विषय में अपनी ही छानबीन की। उसके प्रचार के माध्यम से उनमें से कुछ ने तो मसीहियत को स्वीकार कर लिया था। परन्तु अन्यों ने यीशु के विषय में उसके दावों और पुराने नियम के उसके तर्कों को ठुकरा दिया था।

लूका ने प्रेरितों के काम 28:30-31 में रोम में पौलुस के निवास को संक्षिप्त रूप में बताया है :

> और वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा। और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा। (प्रेरितों के काम 28:30-31)

यरुशलेम में पौलुस की गिरफ्तारी अन्यायपूर्ण, दर्दनाक और जीवन को संकट में डाल देने वाली भी थी। और कैसरिया में उसका कारावास न्याय से उसे लम्बी अवधि तक वंचित करने वाला था। रोम की ओर उसकी यात्रा में भी कई मुश्किले आईं। परन्तु अंत में पौलुस की आशाएं पूरी हुईं और परमेश्वर का वचन पूरा हुआ। पौलुस रोम में पहुंचा। और दो वर्षों तक वह अपने कारावास के बावजूद अपने समय के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य की राजधानी में "बिना रोक-टोक और बहुत निडर होकर" सुसमाचार का प्रचार कर पाया।

सुचारु सेवकाई

अब जब हमने पौलुस के कारावास की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण कर लिया है तो अब हम उसके कारावास के दौरान उसकी सुचारु सेवकाई का अध्ययन करने के लिए तैयार हैं। जैसा कि हम देखेंगे, पौलुस अपने कारावास के दौरान खाली नहीं बैठा रहा। बल्कि वह यीशु मसीह के सुसमाचार के सेवक के रूप में सक्रिय रूप में सेवा करता रहा।

पौलुस एक प्रेरित था। यीशु ने व्यक्तिगत रूप से पौलुस को बुलाया और प्रशिक्षित किया था और उसके राजदूत, अर्थात् उसकी वाचा के दूत के रूप में सेवा करने के लिए नियुक्त किया था। आज शायद हमें यह अनोखा लगे कि पौलुस के लिए निर्धारित कार्य तब भी नहीं रुके जब वह कारावास में था। इसके विपरीत परमेश्वर के विधान में कारागृह ही वह सही स्थान था जहां परमेश्वर चाहता था कि पौलुस अपने

जीवन के इस समय में रहे। स्वयं परमेश्वर ने इन घटनाओं को संचालित किया ताकि रोम में पौलुस का कारावास पश्चिमी जगत के केन्द्र में मसीह के सुसमाचार को फैलाने में पौलुस को एक अवसर प्रदान करे।

उसके कारावास के दिनों के दौरान प्रेरित पौलुस की सुचारु सेवकाई के विषय में हमारे पास जानकारी के दो मुख्य स्रोत हैं। एक ओर, प्रेरितों के काम नामक पुस्तक हमें पौलुस की उस समय की सेवकाई के बारे में काफी कुछ बताती है। और दूसरी ओर कलीसियाओं को लिखे पौलुस के भिन्न-भिन्न पत्र कारागृह से उसकी सेवकाई के विषय में अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं। आइए, हम प्रेरितों के काम से आरंभ करते हैं कि यह पुस्तक हमें पौलुस की सेवकाई के विषय में क्या बताती है।

प्रेरितों के काम

कारावास में पौलुस के अनुभव प्रेरितों के काम के लेखक लूका के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। उसने पौलुस के जीवन के इस समय से संबंधित घटनाओं के विषय में नौ अध्याय समर्पित किए। प्रेरितों के काम 19:21 में यरुशलेम और रोम जाने के पौलुस के निर्णय से लेकर 28:31 में लूका की पुस्तक के अंत तक, लूका ने यरुशलेम में पौलुस की गिरफ्तारी और उसके बाद के कारावास की ओर उसके उद्देश्यपूर्ण प्रस्थान के विवरण दिए हैं।

ये अध्याय अनेक विवरणों से भरपूर हैं, परन्तु कम से कम तीन विषय अनेक अवसरों पर प्रकट होते हैं : आगामी कष्टों के विषय में पौलुस की जानकारी, उसके आगामी कष्टों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य की उसकी जानकारी, और यह जानकारी कि किस प्रकार उसके कष्टों के माध्यम से परमेश्वर की आशीषें उंडेली जाएंगी।

पहला, पौलुस को ज्ञात था कि मसीह के प्रति उसकी सेवकाई उसके जीवन में घोर कष्टों और कठिनाइयों को लेकर आएगी।

कष्टों के बारे में जानकारी

प्रेरितों के काम अध्याय 19 से 28 में लूका ने पौलुस का वर्णन इस प्रकार से किया है जैसे कि उसे आगामी कष्टों की जानकारी पहले से ही थी। पौलुस जानता था कि उसे कारावास में भेजा जाएगा, और उसे यह भी संदेह था कि उसे मृत्यु के घाट भी उतारा जा सकता है।

उदाहरण के तौर पर, प्रेरितों के काम 20:22-25 में इफिसियों के प्राचीनों को दिए गए वक्तव्य में उसके भविष्य-संबंधी शब्दों को सुनें

> और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्रा आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार है। परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं... तुम सब... मेरा मुंह फिर न देखोगे। (प्रेरितों के काम 20:22-25)

प्रेरितों के काम 21:13 में उसेन कैसरिया के विश्वासियों से यह कहा :

> मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिये बरन मरने के लिये भी तैयार हूँ। (प्रेरितों के काम 21:13)

मसीह और उसकी सेवा करने में जो कठिनाइयां पौलुस के समक्ष आने वाली थीं उसके विषय में उसे जानकारी थी और वह शहीद होने के लिए भी तैयार था।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

उद्देश्य की जानकारी

दूसरा, पौलुस को अपने कष्टों के उद्देश्य की जानकारी थी। वह जानता था कि यदि परमेश्वर ने उसे कष्टों में से होकर गुजरने की योजना बनाई है तो परमेश्वर की योजना उसके कष्टों को सुसमाचार की उन्नति के लिए भी इस्तेमाल करने की थी।

पौलुस का विश्वास था कि परमेश्वर उसकी कठिनाइयों का प्रयोग मसीही सुसमाचार को फैलाने में करेगा। वह जानता था कि उसे जो भी बलिदान करना हो वह एक कीमती बलिदान होगा क्योंकि वह मसीह में उद्धार के सुसमाचार को फैलाने में परमेश्वर का मार्ग होगा।

फिर से सुनें कि उसने प्रेरितों के काम 20:24 में इफिसियों के प्राचीनों से क्या कहा:

> परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, बरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरी करूं, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है। (प्रेरितों के काम 20:24)

पौलुस इस बात से आश्वस्त था कि कारावास में उसकी सेवकाई में सुसमाचार की गवाही देना भी शामिल होगा, और कि एक प्रेरित होने के रूप में इन कठिनाइयों से होकर जाना उसके कार्य का एक हिस्सा है। पौलुस की प्रैरितिक सेवकाई में रुकावट बनने की अपेक्षा कारवास वह साधन बना जिसके द्वारा पौलुस ने अपनी सेवकाई को पूरा किया।

वास्तव में, जिस प्रकार हम प्रेरितों के काम में कहीं पढ़ते है, बिल्कुल ऐसा ही हुआ। प्रेरितों के काम 22:1-21 में हम पढ़ते हैं कि जब पौलुस को यरुशलेम में गिरफ्तार किया गया तो उसने उस भीड़ के समक्ष अपनी गवाही प्रस्तुत की जो उसकी मृत्यु चाहती थी।

प्रेरितों के काम 23:1-10 में लूका ने स्पष्ट किया कि पौलुस ने यहूदी शासन मण्डल, महासभा के समक्ष सुसमाचार और मसीह के पुनरुत्थान की गवाही दी।

फिर प्रेरितों के काम 24:14-26 में हम देखते हैं कि पौलुस ने पहले तो सार्वजनिक रूप से कैसरिया के न्यायालय में और फिर गुप्त रीति से राज्यपाल फेलिक्स और उसकी यहूदी पत्नी द्रूसिल्ला के समक्ष सुसमाचार का प्रचार किया। हमें यह भी बताया गया है कि फेलिक्स दो वर्षों तक लगातार पौलुस से वार्तालाप करता रहा।

इसके पश्चात्, प्रेरितों के काम 25:18 से 26:29 में लूका हमें बताता है कि पौलुस ने नए राज्यपाल फेस्तुस के समक्ष और यहूदी राजा अग्रिप्पा और उसकी पत्नी बिरनिके के समक्ष सुसमाचार की घोषणा की।

और प्रेरितों के काम 28:23-31 में लूका वर्णन करता है कि पौलुस ने उन सबके समक्ष पपरमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया जो उसे देखने के लिए रोम में आए थे।

प्रेरितों के काम 23:11 में पौलुस को कहे गए मसीह के शब्द इन सारे कष्टों के उद्देश्य का सार बताते हैं :

> ढ़ाढ़स बान्ध; क्योंकि जैसी तू ने यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी। (प्रेरितों के काम 23:11)

पौलुस ने यरुशलेम से रोम तक मसीह के सुसमाचार को फैलाते हुए कष्ट सहे।

आशीष की जानकारी

तीसरा, पौलुस इस समय में अपनी सेवकाई पर परमेश्वर की आशीष के प्रति जानकार था। प्रेरितों के काम 19:28 में लूका इस बात को स्पष्ट करता है कि पौलुस द्वारा सुसमाचार की साक्षी परमेश्वर के आत्मा की विचित्र आशीषों के साथ फैली।

लूका हमें यह भी बताता है कि पौलुस की सेवकाई में कुछ और बातें भी शामिल थीं जिन्होंने सुसमाचार की घोषणा करने और लोगों के जीवन में उसे लागू करने में उसकी योग्यता में योगदान दिया। उदाहरण के तौर पर, उसने उस जहाज पर सवार लोगों के जीवनों को बचाने के लिए दर्शन प्राप्त किया और और उसका अर्थ भी बताया जो समुद्री-चट्टान से टकरा गया था। माल्टा द्वीप पर उसने बीमारों को चंगा किया। और जो विश्वासी उसके पास आए उसने उनकी जरुरतों के प्रति सेवकाई भी की।

प्रेरितों के काम में दी गई सूचनाओं के अतिरिक्त, कारावास के दौरान पौलुस की सुचारु सेवकाई के विषय में हम कुलुस्सियों, इफिसियों और फिलिप्पियों की कलीसियाओं तथा कुलुस्सियों के व्यक्ति फिलेमोन को लिखी उसकी नए नियम की पत्रियों के द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कलीसियाओं को पत्र

पौलुस की सेवकाई का सार बताने के कई तरीके हैं, परन्तु कम से कम चार विषय सामने आते हैं। यद्यपि पौलुस शारीरिक रूप से बंदिश में था, परन्तु उसने अनेक उच्चाधिकारियों और आगन्तुकों के समक्ष प्रचार करने के द्वारा, दुनियाभर की कलीसियों और विश्वासियों के लिए प्रार्थना करने के द्वारा, कलीसिया के लाभ के अनेक कठिनाइयों को झेलने के द्वारा, और निसंदेह संसारभर की कलीसियाओं और लोगों को पत्र लिखने के द्वारा अपनी सेवकाई जारी रखी। पहला, पौलुस ने इस समय के दौरान सुसमाचार का प्रचार किया।

प्रचार

जैसा कि हम देख चुके हैं, पौलुस ने मुख्यत: सुसमाचार का प्रचार करने के लिए नए अवसरों को पाने हेतु ही कारावास के दण्ड को सहा था। हम ऐसा केवल जंजीरों में मसीह के राजदूत के रूप में अपनी निरंतर पहचान करवाने में ही नहीं बल्कि उन प्रार्थनाओं में भी पाते हैं जो उसने उन कलीसियाओं से अपने लिए करने को कहा था जिन्हें उसने पत्र लिखे थे।

उदाहरण के लिए इफिसियों 6:19-20 में उसके आग्रह को सुनें :

> और मेरे लिये भी (प्रार्थना करो), कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए, कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूं जिस के लिये मैं जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत हूँ। और यह भी कि मैं उस के विषय में जैसा मुझे चाहिए हियाव से बोलूं। (इफिसियों 6:19-20)

पौलुस जानता था कि कारावास में भी उसका प्रमुख दायित्व सुसमाचार का प्रचार करना था। और इसलिए उसने इफिसियों से आग्रह किया कि वे उसके लिए प्रार्थना करें ताकि उसे अपने प्रैरितिक दायित्व को पूरा करने में सामर्थ मिले।

इसी प्रकार कुलुस्सियों 4:3-4 में उसने लिखा :

> और इस के साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे लिये वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

> सकें जिस के कारण मैं कैद में हूँ। और उसे ऐसा प्रगट करूं, जैसा मुझे करना उचित है। (कुलुस्सियों 4:3-4)

पौलुस प्रार्थना चाहता था ताकि उसे सुसमाचार का प्रचार करने के अवसर मिलें, ताकि वह अपने समक्ष आए अवसरों का भरपूर लाभ उठा सके।

प्रार्थना

दूसरा, पौलुस कलीसियाओं के लिए निरन्तर प्रार्थना कर रहा था। पौलुस की पत्रियों के अनुसार उसकी सेवकाई गैरविश्वासियों के समक्ष सुसमाचार का प्रचार करने से आगे बढ़ गई थी। उसमें अब पूरी दुनिया की भिन्न-भिन्न कलीसियाओं और विश्वासियों के लिए निरन्तर प्रार्थना भी शामिल थी।

व्यावहारिक रूप से कहें तो, ऐसा संभव है कि पौलुस के कारावास ने उसके द्वारा प्रार्थना मे बिताए जाने वाले समय को बढ़ा दिया। उसकी मिशनरी यात्राओं के दौरान, वह सामान्यत: यात्राओं में व्यस्त था, और अपनी आर्थिक जरुरतों के लिए कार्य भी कर रहा था। परन्तु कारावास में उसके पास करने को कोई कार्य नहीं था, यात्रा करने के लिए कोई स्थान नहीं था और न ही कोई भटकाव थे। इससे उसको प्रार्थना करने के लिए काफी समय मिल गया। और उसके पत्रों से मिली गवाही से ऐसा प्रतीत हुआ कि पौलुस ने स्वयं को दूसरों के लिए प्रार्थना करने में ज्यादा समय बिताने के प्रति उत्तरदायी एवं सम्मानित समझा।

इफिसियों 1:16-18 में दूसरे विश्वासियों के लिए अपनी प्रार्थनाओं के विषय में पौलुस की गवाही को सुनें :

> तुम्हारे लिये धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूँ। कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर. . . तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश का आत्मा दे। और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों। (इफिसियों 1:16-18)

पौलुस ने इफिसियों के लिए निरन्तर रूप से बिना किसी रूकावट के प्रार्थना की। वह मानता था कि प्रार्थना में सामर्थ होती है, और उसे आशा थी कि परमेश्वर इफिसियों को आशीष देने के द्वारा उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। प्रार्थना में पौलुस के प्रयासों ने उनके प्रति एक उत्साहपूर्ण और कीमती सेवकाई की रचना की जो उसके करीब नहीं थे।

इसी प्रकार, फिलिप्पियों 1:3-9 में, उसने स्पष्ट किया कि वह फिलिप्पी की कलीसिया के लिए निरन्तर प्रार्थना करता है :

> मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूँ, तब तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। और जब कभी तुम सब के लिये बिनती करता हूँ, तो सदा आनन्द के साथ बिनती करता हूँ... और मैं यह प्रार्थना करता हूँ, कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए। (फिलिप्पियों 1:3-9)

और कुलुस्सियों 1:9 में हम कुलुस्से की कलीसिया के प्रति उसके समर्पण को पढ़ते हैं :

> इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ। (कुलुस्सियों 1:9)

उसने अलग-अलग लोगों के लिए भी प्रार्थना की, जैसे कि कुलुस्सियों की कलीसिया में फिलेमोन, आफिया और अर्खुप्पुस। उदाहरण के तौर पर फिलेमोन पद 6 में उसने लिखा :

> मैं प्रार्थना करता हूँ कि विश्वास में तेरा सहभागी होना, तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में, मसीह के लिए प्रभावशाली हो। (फिलेमोन पद 6)

इन सभी अनुच्छेदों में हम देखते हैं कि पौलुस ने अपने साथी विश्वासियों के लिए प्रार्थना करने में अपने आप को समर्पित कर दिया और उनके लिए परमेश्वर से अनेक आशीषें मांगी।

कष्ट

तीसरा, प्रचार और प्रार्थना करने के अतिरिक्त कारावास में पौलुस की सेवकाई में दूसरों के लिए कष्ट झेलना भी शामिल था। अब कष्ट झेलना अपने आप में एक कठिनाई है, सेवकाई नहीं। परन्तु जब कष्टों का लक्ष्य और प्रतिफल सुसमाचार की उन्नति के माध्यम से परमेश्वर के राज्य का विस्तार हो तो कष्टों को मसीही सेवकाई के एक रूप में समझना उचित ही है।

मसीहियों ने सदैव कष्ट उठाया है और यीशु के आगमन तक कष्ट उठाते भी रहेंगे। बाइबल हमें इससे आश्वस्त करती है। अब इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी मसीही एक जितना कष्ट उठाते हैं या पौलुस के जितना कष्ट उठाते हैं। परन्तु परमेश्वर ने यह निर्धारित किया है कि जब तक यीशु अपना कार्य पूरा करने के लिए लौट नहीं आता, जब तक वह अपने राज्य को पृथ्वी पर पूर्ण स्थापित नहीं कर लेता तब तक उसके शत्रु उसके विरुद्ध लड़ाई करते रहेंगे। और इसका अर्थ है कि यीशु के लोग निरन्तर कष्ट उठाते रहेंगे।

परन्तु पौलुस का जीवन कुछ प्रमाणित करता है : हमारा कष्ट उठाना व्यर्थ नहीं है। इसके विपरीत, हमारे कष्ट कलीसिया को आशीष प्रदान करते हैं। हमारे कष्ट सुसमाचार की गवाही देते हैं, हमारे कष्ट उस महिमा को बढ़ा देते हैं जो कलीसिया को मिलने वाली है।

सुसमाचार की खातिर कष्ट उठाना शक्तिशाली और उद्देश्यपूर्ण सेवकाई है। यह सुसमाचार के सत्य के प्रति निर्विवाद साक्षी है। इसी कारण हम उन मसीहियों का उल्लेख सदैव करते हैं जो अपने विश्वास के लिए "शहीदों" या "गवाहों" के रूप में मर जाते हैं। हम पहले ही कई रूपों में देख चुके हैं कि किस प्रकार पौलुस के कष्टों ने उसके लिए सुसमाचार का प्रचार करने के अवसर प्रदान किए। परन्तु इसने दूसरों को भी सुसमाचार का प्रचार करने को उत्साहित किया।

फिलिप्पियों 1:14 में इस विषय में पौलुस के शब्दों को सुनें :

> और प्रभु में जो भाई हैं, उन में से बहुधा मेरे कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी हियाव करते हैं। (फिलिप्पियों 1:14)

इसके अतिरिक्त, कष्टों को सेवकाई के रूप में सोचना उचित है क्योंकि ये दूसरों को लाभ पहुंचाते हैं। आखिरकार, यीशु मसीह ने पापियों के लिए कष्ट उठाए और हमें उद्धार देने के लिए उसने मृत्यु सही। और पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि हम दूसरों के लिए कष्ट झेलकर मसीह के उदाहरण का अनुसरण करें। विश्वासी होने के नाते हमें दूसरों के लाभ के लिए कठिनाइयां झेलने और मृत्यु झेलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए, और हमें उन कष्टों के प्रति आभारी रहना चाहिए जो दूसरे इस कारणवश उठाते हैं।

जिस प्रकार प्रेरित यूहन्ना ने 1यूहन्ना 3:16 में लिखा :

> हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए। (1यूहन्ना 3:16)

पौलुस ने इस पर विश्वास किया। और जिस प्रकार हम देख चुके हैं, वह कारागृह में जाने, और मरने तक भी तैयार था यदि ऐसा करने से सुसमाचार की उन्नति होती है।

इफिसियों 3:13 में हम दूसरों के लिए कष्ट सहने में उसकी इच्छा के बारे में पढ़ते हैं :

> इसलिये मैं बिनती करता हूँ कि जो क्लेश तुम्हारे लिये मुझे हो रहे हैं, उनके कारण हियाव न छोड़ो, क्योंकि उन में तुम्हारी महिमा है। (इफिसियों 3:13)

पौलुस का कहना यहां पर यह था कि उसके कारावास ने नए स्थानों और नए लोगों के समक्ष सुसमाचार का प्रचार करने की उसे अनुमति दी, जिससे वह बहुत से लोगों को मसीह के विश्वास में लेकर आया। जब सुसमाचार फैलता है और कलीसिया बढ़ती है तो उस महिमा में वृद्धि होती है जो सभी विश्वासी प्राप्त करेंगे।

तीसरा, पौलुस के पत्र दर्शाते हैं कि उसके कष्ट स्वयं मसीह के कष्टों की निरन्तरता ही थे। कुलुस्सियों 1:24 में पौलुस ने अपने कष्टों के विषय में सबसे बड़ा दावा किया :

> अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिये उठाता हूँ, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ। (कुलुस्सियों 1:24)

कुलुस्सियों के पहले अध्याय में पौलुस ने मसीह की संपूर्ण पर्याप्तता का बलपूर्वक दावा किया। इसलिए जब उसने कहा कि मसीह के कष्टों में "कमी" थी, तो पौलुस का अर्थ यह नहीं था कि मसीह की मृत्यु हमारा उद्धार करने में अपर्याप्त थी, या फिर विश्वासी मसीह की मृत्यु में अपनी योग्यताओं को भी जोड़ते हैं। इसकी अपेक्षा, पौलुस का अर्थ था कि यीशु का कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ था। जब यीशु की मृत्यु हुई और वह स्वर्ग में चढ़ गया, तो उसने बुराई पर कड़ा प्रहार किया और अपने शैतानी शत्रुओं के विरुद्ध प्रभावशाली रूप से युद्ध को जीत लिया। परन्तु पौलुस जानता था कि शैतानी शक्तियां लगातार मसीह और उसके राज्य के विरुद्ध युद्ध करती रहती हैं। यीशु तब तक अपने शत्रुओं पूरी तरह से नाश नहीं करेगा जब तक महिमा में उसका पुन: आगमन नहीं हो जाता।

तब तक, कलीसिया को उन सभी कष्टों को सहन करना है जो परमेश्वर ने हमारे लिए निर्धारित किए हैं। और क्योंकि यीशु हमें बहुत प्रेम करता है, और क्योंकि वह सभी विश्वासियों से जुड़ा हुआ है तो जब हम कष्ट सहते हैं तो उसे भी कष्ट होता है। बहुत ही यथार्थ रूप में कलीसिया के कष्ट मसीह के कष्ट हैं।

यही वह बिंदू है जो स्वयं यीशु ने दमिश्क के मार्ग में पौलुस के हृदयपरिवर्तन के समय उसके समक्ष रखा था। पौलुस, जो उस समय शाउल के नाम से जाना जाता था, मसीहियों को कारागृह में डालने और उनको मार डालने का प्रयास करके सक्रिय रूप से मसीहियों को सता रहा था। परन्तु जब वह मसीहियों को गिरफ्तार करने के लिए दमिश्क के मार्ग में था तो यीशु ने उसे जमीन पर गिराकर और उस पर सत्य को प्रकट करके मार्ग में उससे भेंट की।

यीशु और पौलुस के बीच हुई वार्तालाप का कुछ अंश प्रेरितों के काम 9:5 में लिखा हुआ है :

> उस ने पूछा; "हे प्रभु, तू कौन है?"
> उस ने कहा; "मैं यीशु हूँ; जिसे तू सताता है।" (प्रेरितों के काम 9:5)

यीशु ने यह पौलुस के समक्ष स्पष्ट किया कि विश्वासियों को सताना स्वयं यीशु को सताना है। अत: जब एक विश्वासी कष्ट सहता है तो यीशु को भी कष्ट होता है।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

सारांश में मसीह को उसके आगमन तक कष्ट सहना अनिवार्य है, और वह अपनी देह, अर्थात कलीसिया के कष्टों में कष्ट सहता है। परन्तु जब उसके कष्ट पूर्ण हो जाएंगे तो वह अंत में अपने सब शत्रुओं को पराजित करेगा, और वह अपनी कलीसिया को महिमान्वित करेगा। उन निर्धारित कष्टों को पूरा करने में मसीह की सहायता करना पौलुस का सौभाग्य था।

यह दर्शाने के अतिरिक्त कि उसने एक प्रेरित के रूप में प्रचार किया, प्रार्थना की, और कष्ट सहा, पौलुस के पत्र यह भी दर्शाते हैं कि जब वह बंधनों में था तो वह एक जोशपूर्ण लेखन सेवकाई में भी सलंग्न था।

लेखन

कारावास के वर्षों के दौरान पौलुस की लेखन सेवकाई को कुलुस्से, इफिसुस, और फिलिप्पी और कुलुस्से के व्यक्ति फिलेमोन को लिखी उसकी नए नियम की पत्रियों में दर्शाया गया है। इन पत्रों के माध्यम से पौलुस कलीसियाओं और लोगों को प्रासंगिक पासवानी सेवकाई प्रदान कर सका। और क्योंकि ये लेखन नए नियम में हमारे लिए रखे गए हैं, इसलिए पौलुस की सेवकाई पिछले दो हजार वर्षों से संसारभर में फैलती जा रही है।

पौलुस के लेखन उन कलीसियाओं और लोगों के प्रति एक गहन सेवकाई को दर्शाते हैं जिनके साथ उसके लगातार संबंध रहे थे। वह उनकी परिस्थितियों के विषय में बहुत कुछ जानता था और उन्हें व्यक्तिगत रूप में भी जानता था। इसके परिणामस्वरूप, पौलुस अनेक विषयों को संबोधित कर सका जो उसके श्रोताओं से व्यक्तिगत और धर्मविज्ञानीय दोनों प्रकार से जुड़े हुए थे। उसने कुछ लोगों को नाम लेकर भी निर्देश दिए। यात्रा करने की अयोग्यता के बावज़ूद भी पौलुस की सेवकाई में उसे सब जानकारी थी और उसकी सेवकाई उन कलीसियाओं और लोगों, जिनको उसने पत्र लिखे थे, की परिस्थितियों के अनुसार बहुत ही ध्यान से क्रियान्वित की गई थी।

उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों को लिखी उसकी पत्री पर ध्यान दें, दो स्त्रियों, सुन्तुखे और यूआदिया, का एक-दूसरे से मेलमिलाप करवाने के उत्साहपूर्ण संदेश के साथ पौलुस पासवानी सेवकाई में शामिल हुआ। ये वे स्त्रियां थीं जिन्हें पौलुस जानता था, वे स्त्रियां जिन्होंने उसके साथ परिश्रम किया था, परन्तु उनका एक-दूसरे से मतभेद हो गया था। उनके लिए पौलुस की चिंता व्यक्तिगत और प्रेमपूर्ण थी, और उनकी समस्या के प्रति उसका समाधान बहुत ही कोमल था।

फिलिप्पियों 4:2 में हम उनको कहे गए पौलुस के शब्दों को देखते हैं :

> मैं यूआदिया को भी समझाता हूँ, और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। (फिलिप्पियों 4:2)

लगभग इसी प्रकार पौलुस फिलेमोन की पुस्तक में विश्वासियों के बीच मेल-मिलाप की याचना करता है। वहां उसने एक दास उनेसिमस के लिए बिचवई की, जो कुलुस्से के अपने स्वामी के घर से भाग गया था। वास्तव में फिलेमोन की पूरी पुस्तक इसी याचना पर आधारित है कि फिलेमोन उनेसिमस के प्रति दयाशील हो।

स्पष्टत:, अपने स्वामी के घर से भागने पर उनेसिमस ने फिलेमोन के मित्र पौलुस को खोजने का प्रयास किया था। और पौलुस की सेवकाई में ही उनेसिमस मसीही बन गया था। इससे बढ़कर, उनेसिमस पौलुस के साथ रहा था और कारागृह में उसने उसकी सेवा भी की थी। अत: उनेसिमस और फिलेमोन के प्रति पौलुस की सेवकाई बहुत ही व्यक्तिगत थी, और उसने उनके पासवान और मित्र के रूप में उनके संबंध को पुन: सुधारने का कार्य किया।

पौलुस ने अपने पत्रों को उन धर्मविज्ञानीय विषयों की ओर भी निर्देशित किया जो पूरी कलीसिया से संबंधित थे, जिसमें उसने पासवानी दृष्टिकोण के साथ आधिकारिक प्रेरितिक निर्देश प्रदान किए। मसीह के एक आधिकारिक प्रतिनिधि के रूप में उसकी शिक्षण सेवा कारावास के दौरान भी नहीं रुकी। बल्कि पौलुस इस समय के दौरान सत्य के अचूक प्रकाशन प्रदान करता रहा और उस सत्य को अपने पत्रों के द्वारा कलीसिया पर निरन्तर लागू करता रहा।

जैसे हम देख चुके हैं, प्रेरितों के काम और नए नियम में पाए जाने वाले पौलुस के पत्र दर्शाते हैं कि पौलुस अपने कारावास के दौरान सक्रिय रूप से सेवकाई में लगा हुआ था। वह जानता था कि परमेश्वर ने कारावास को एक अवसर के रूप में उसे प्रदान किया है कि वह सुसमाचार को फैला सके और पवित्र जनों के लिए एक उदाहरण बन सके। और इस ज्ञान के द्वारा प्रेरित होकर उसने प्रचार करने, प्रार्थना करने, कष्ट सहने और लिखने की एक सक्रिय सेवा की, जिसके द्वारा उसने यीशु मसीह के प्रेरित होने के सभी कर्त्तव्यों को विश्वासयोग्यता से पूरा किया।

धर्मवैज्ञानिक एकता

अब जब हमने पौलुस के कारावास की पृष्ठभूमि का परिचय दे दिया है और कारावास के दौरान उसकी सुचारु सेवकाई को स्पष्ट कर दिया है, तो अब हम कारावास से लिखी उसकी पत्रियों की धर्मविज्ञानीय एकता की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। इस भाग में हम कुछ धर्मशिक्षा-संबंधी विषयों की जांच करेंगे जो कारावास की पत्रियों में एक समान पाए जाते हैं, और यह भी स्पष्ट करेंगे कि वे पौलुस के धर्मविज्ञान की विशाल प्रणाली में किस प्रकार उपयुक्त बैठते हैं।

पौलुस द्वारा कारावास से लिखी पत्रियों में कुछ समान महत्वपूर्ण धर्मशिक्षा-संबंधी आधार पाए जाते हैं। सबसे आधारभूत बात यह है कि वे सब समान सुसमाचार की पुष्टि करती हैं। परन्तु इससे बढ़कर, उनमें सुसमाचार को प्रस्तुत करने का समान तरीका पाया जाता है और वे उस सुसमाचार के समान पहलूओं पर बल देती हैं। कहने का अर्थ यह नहीं है कि वे एक दूसरे के जैसी ही हैं। परन्तु एक विशाल चित्र है जो उनको जोड़ता है, एक समान आधार है जिस पर वे सब निर्भर हैं। और वह समान आधार यह तथ्य है कि यीशु मसीह पूरी सृष्टि का विजेता और शासक है।

कारावास की पत्रियों की धर्मविज्ञानीय एकता पर हमारी चर्चा तीन मुख्य धर्मशिक्षाओं पर बल देगी। पहला, हम इस धर्मशिक्षा पर बल देंगे कि यीशु मसीह सृष्टि का राजा है। दूसरा, हम सृष्टि पर यीशु के राजत्व के एक विशेष पहलू, अर्थात् मसीह के राजत्व में विश्वासियों के साथ उसके संयोजन, पर ध्यान से चर्चा करेंगे। और तीसरा, हम नैतिक जीवन की उन आवश्यकताओं पर ध्यान देंगे जो पहली दो धर्मशिक्षाएं दर्शाती हैं। हम इस धर्मशिक्षा के साथ आरंभ करेंगे कि मसीह सृष्टि का राजा है।

सृष्टि का राजा

पौलुस द्वारा सृष्टि पर मसीह के राजत्व पर दिया गया बल शायद उसके अन्य लेखनों से अधिक कारावास के लेखनों में दर्शाया गया है। हम मसीह के राजत्व के उन तीन पहलुओं पर ध्यान देंगे जो उसकी कारावास की पत्रियों में प्राय: प्रकट होते हैं, वे हैं : उसकी सर्वोच्चता, जो उसकी शक्ति और अधिकार को दर्शाती है; उसका सम्मान, जिसमें उसकी महिमा भी शामिल है और आदर पाने, अनुसरण करने और आराधना पाने के लिए उसकी योग्यता भी; और पृथ्वी पर उसके राज्य को स्थापित करने के

लिए वापिस आने हेतु उसका दृढ़ संकल्प। आइए मसीह की राजकीय सर्वोच्चता पर ध्यान देने के साथ आरंभ करें।

सर्वोच्चता

जब हम कहते हैं कि मसीह सर्वोच्च है, हमारा अर्थ है कि उसमें अपनी इच्छा को पूर्ण करने की सामर्थ और शक्ति है, और उसमें ऐसा करने का वैध अधिकार और हक है। प्राचीन जगत में राजा और सम्राट अपने राज्यों की सेनाओं को आज्ञा देते थे अर्थात अपनी इच्छाओं को पूरी करने की शक्ति देते थे। उनके राज्यों के कानून भी शासन और प्रबंधन करने में उनके अधिकार की पुष्टि करते थे, अर्थात् उनमें भी अपनी इच्छा को पूरी करने का अधिकार था। अनेक आधुनिक प्रशासनों में ऐसी ही शक्ति और अधिकार पाए जाते हैं।

पौलुस के अनुसार जब यीशु का स्वर्गारोहण हुआ, पिता परमेश्वर ने उसे पूरी सृष्टि पर इस प्रकार की सर्वोच्चता प्रदान कर दी थी। यीशु अब इतना शक्तिशाली और आधिकारिक है कि उसकी सर्वोच्चता सारे राजाओं और शासकों पर भी है, चाहे वे पृथ्वी पर हो या आत्मिक क्षेत्र में।

इफिसियों 1:20-22 में पौलुस ने उस सर्वोच्चता का वर्णन किया जो पिता ने मसीह को इस प्रकार दी थी :

> (पिता ने) उस को... स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया। और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। (इफिसियों 1:20-22)

अब पूरी शक्ति के साथ यीशु मसीह पूरी सृष्टि पर राज्य करता है। और उसकी सर्वोच्चता केवल स्वर्गीय क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है। वह पृथ्वी पर भी राज्य करता है।

जिस प्रकार स्वयं यीशु ने मत्ती 28:18 में कहा था :

> यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। (मत्ती 28:18)

यीशु मसीह, हमारा प्रभु और उद्धारकर्त्ता, दूरदराज के आकाशीय पिण्ड से लकर पृथ्वी के छोटे से छोटे भाग समेत पूरी सृष्टि पर राज्य करता है। वह संसार के प्रशासनों और राज्यों पर, प्रत्येक स्वर्गदूत और दुष्टात्मा पर शासन करता है। स्पष्टत:, सृष्टि के सारे तत्व उसकी इस प्रकार आज्ञा नहीं मानते हैं जैसे उन्हें माननी चाहिए। परन्तु फिर भी यीशु के पास आज्ञाकारिता की मांग करने और उसे पूरा करवाने का अधिकार और शक्ति है। और उसके पास जिनसे वह प्रसन्न हो उसे आशीष देने और अपने शत्रुओं को पूर्ण रूप से नाश करने की असीमित शक्ति और अधिकार है।

मसीह की सर्वोच्चता पर बल देने के अतिरिक्त पौलुस ने मसीह के सम्मान, जिसमें उसकी महिमा और गौरव है, की ओर भी ध्यान आकर्षित किया, और वह आदर, अनुसरण और आराधना के प्रतुयत्तरों की मांग करता है।

सम्मान

मसीह का सम्मान किया जाता है क्योंकि वह सिद्ध, पवित्र और धर्मी है। और उसका सम्मान इसलिए भी किया जाता है क्योंकि उसके पास उच्चतम अधिकार का पद है, और क्योंकि वह उस

अधिकार का प्रयोग न्यायपूर्ण एवं धार्मिक रूप से करता है। उसका सम्मान इसलिए भी किया जाता है क्योंकि वह स्वयं संपूर्ण सृष्टि में सबसे अधिक आदरयोग्य प्राणी है, वह जिसे परमेश्वर किसी भी अन्य से अधिक महत्व देता है। और उसका सम्मान किया जाता है क्योंकि वह इस सृष्टि का रचनाकार और संभालने वाला है। हम यीशु के सम्मानयोग्य होने के सैंकड़ो कारण आसानी से गिना सकते हैं। परन्तु शायद सबसे महत्वपूर्ण कारण कि यीशु सम्मान और प्रशंसा के योग्य है क्योंकि वह दैव्य है; यीशु परमेश्वर है, और परमेश्वर हर संभव उच्चतम सम्मान के योग्य है।

एक कारण कि क्यों पौलुस ने यीशु के सम्मान पर इतना अधिक बल दिया, क्योंकि कलीसिया के कुछ लोगों ने इस बात का महत्व नहीं जाना कि यीशु कितना सम्मानयोग्य था। स्पष्टत:, झूठे शिक्षकों ने कलीसिया में स्वर्गदूतों और आत्माओं की आराधना को शुरु कर दिया था, और उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि यीशु उन्हीं के समान एक था। पौलुस द्वारा इन झूठी शिक्षाओं का खण्डन करने का एक तरीका मसीह की अद्वितीय और असीम महानता पर बल देना था।

सुनें कुलुस्सियों 1:16-17 में उसने किस प्रकार मसीह और अन्य आत्मिक प्राणियों में फर्क किया।

> क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। (कुलुस्सियों 1:16-17)

यीशु अद्वितीय है क्योंकि वह उस सब का सृष्टिकर्त्ता है जिसका अस्तित्व है : उन स्वर्गदूतों और आत्माओं का भी जिनकी झूठे शिक्षक आराधना करते थे। यीशु ब्रह्मांड में केवल सबसे महान् शासक मात्र ही नहीं है। वह ऐसा भी है जिसने सभी निचले स्तर के अधिकारों, आत्मिक क्षेत्र और पृथ्वी दोनों में, को भी स्थापित किया है जिस पर दूसरे शासक राज्य करते हैं। और वह ऐसा भी जिसने दूसरे शासकों की रचना भी की है, चाहे वे पृथ्वी पर राज्य करने वाले मानवीय प्राणी हों या स्वर्गदूत और दुष्टात्माएं जिनका अधिकार आत्मिक क्षेत्र में होता है।

मसीह की सर्वोच्चता और सम्मान के रूप में मसीह के राजत्व के विषय में बात करने के अतिरिक्त पौलुस ने अपने राज्य की स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर पुन: लौटने की मसीह के दृढ़ संकल्प पर भी बल दिया।

दृढ़ संकल्प

मसीह के आगमन के विषय में पौलुस के दृष्टिकोण को समझने के लिए हमें यह समझना आवश्यक है कि अंत समय के विषय में उसकी शिक्षा (या उसकी युगांत विद्या) अंत समय के पारंपरिक यहूदी दृष्टिकोणों से निकली है। पौलुस के समय में पारंपरिक यहूदी धर्मविज्ञान में ऐसा सोचा जाता था कि पवित्रशास्त्र मानवजाति के दो मुख्य युगों को दर्शाती है। मसीह के आने से पूर्व संसार वर्तमान युग में था और जिसमें पाप, मृत्यु और भ्रष्टाचार पाया जाता था।

वर्तमान युग के बाद आने वाला या आगामी युग आना था, जिसे बाइबल परमेश्वर का राज्य या स्वर्ग का राज्य कहती है। यह परिवर्तन अचानक से मसीहा के आगमन पर होना था।

परन्तु पौलुस और नए नियम के अन्य लेखकों के अनुसार यीशु ने प्रकट किया था कि यह पारंपरिक यहूदी विचारधारा पूरी तरह से सही नहीं थी। आगामी युग वर्तमान युग को बदल देगा, परन्तु एकदम से नहीं। इसकी अपेक्षा, ये दोनों युग कुछ समय के लिए एक साथ आएंगे, जो यीशु की पृथ्वी पर की गई सेवा के साथ आरंभ होगा जिसे हम परमेश्वर के राज्य का आरंभ कहेंगे जो मसीह के पुनरागमन या द्वितीय आगमन तक चलेगा, जिसे हम परमेश्वर के राज्य की पूर्ण स्थापना कहेंगे। इस आरंभ और पूर्ण स्थापना के बीच एक ऐसा समय होगा जिसे हम परमेश्वर के राज्य की निरंतरता कहेंगे। यह बीच का समय

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

वह समय है जिसमें पौलुस के समय में कलीसिया का अस्तित्व था, और जिसमें यह आज भी अस्तित्व में है।

अपने श्रोताओं को दर्शाने हेतु यह पौलुस के लिए एक महत्वपूर्ण बात थी क्योंकि इसने उनकी अनेक समस्याओं को सुलझा दिया था। पाप, मृत्यु और भ्रष्टाचार का यह वर्तमान युग अभी नष्ट नहीं हुआ था इसीलिए विश्वासी निरन्तर कष्ट सहते रहे। फिर भी, एक दिन सभी विश्वासियों को अंतिम आशीषें प्रदान करने के लिए यीशु पुन: लौटेगा। इसी बीच मसीहियों को यह विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु का पुनरागमन अवश्य होगा। और हम यह आशा कर सकते हैं कि ऐसा अवश्य होगा क्योंकि जो कार्य मसीह ने शुरु किया है उसे पूर्ण करने के लिए वह दृढ़-संकल्पी है।

इस समय यीशु स्वर्ग से राजा के समान राज्य करता है। परन्तु वह उससे सन्तुष्ट नहीं है। वह जिस प्रकार इस समय स्वर्ग में राज्य करता है उसी प्रकार पूर्ण एवं महिमान्वित रूप में अपनी पूर्ण सृष्टि पर शासन करना चाहता है। वह तब तक संतुष्ट नहीं होगा जब तक वह अंतिम एंव पूर्ण रूप से अपने सभी शत्रुओं का नाश करके उन्हें दण्ड न दे दे और अपने विश्वासयोग्य विश्वासियों को आशीषित न कर दे। और उसकी योजना है कि वह संपूर्ण पृथ्वी पर अपने राज्य का विस्तार करके ऐसा करे।

क्योंकि पौलुस संपूर्ण सृष्टि पर शासन करने की मसीह की योजना से अवगत था, इसलिए उसने पूरे विश्वास से दावा किया कि मसीह अपने राज्य की पूर्ण स्थापना करने के प्रति दृढ़-संकल्पी था। यही कारण था कि उसने विश्वासियों की भावी मीरास के विषय में सामान्य रूप से लिखा, और कि उसने उन पुरस्कारों में असीम आशा रखी जो मसीह के पुनरागमन के समय उसको मिलेंगे।

उदाहरण के तौर पर इफिसियों 1:13-14 में उसके शब्दों पर ध्यान दें :

> जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की स्तुति हो। **(इफिसियों 1:13-14)**

पौलुस ने बल दिया कि हमारी भावी मीरास निश्चित है : परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है और वह अपनी योजना नहीं बदलेगा। फलस्वरूप, पूर्ण स्थापित राज्य में हमारी मीरास को प्रदान करने के लिए यीशु का आना आवश्यक है।

और फिलिप्पियों 3:20-21 में पौलुस ने इन शब्दों में मसीह के पुनरागमन के विषय में लिखा :

> पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने ही बाट जोह रहे हैं। वह... हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा। **(फिलिप्पियों 3:20-21)**

जब मसीह पृथ्वी पर अपने राज्य की पूर्ण स्थापना करने के लिए आता है तो हमारी मीरास में नए, महिमान्वित शरीर शामिल होंगे। पौलुस इस मीरास के विषय में बहुत ही आत्मविश्वास के साथ बोल सका क्योंकि वह जानता था कि यीशु ने पुन: लौटने की प्रतिज्ञा की है और कि यीशु उस प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए दृढ़-संकल्पी है।

कारावास से लिखी अपनी सभी पत्रियों में पौलुस अपनी शिक्षाओं के आधार के रूप में मसीह की राजकीय सर्वोच्चता, सम्मान और दृढ़-संकल्प पर निर्भर रहा। ये विषय इन पत्रियों में बार-बार पाए जाते हैं और कुलुस्सियों, इफिसियों और फिलिप्पियों को दी गई पौलुस की अनेक शिक्षाओं को आधार प्रदान करते हैं।

अब जब हम इस धर्मशिक्षा को देख चुके हैं कि यीशु मसीह सृष्टि का राजा है, इसलिए हमें कारावास की पत्रियों में समान रूप से पाई जाने वाली धर्मशिक्षा के दूसरे बिंदू की ओर ध्यान लगाना

चाहिए, अर्थात् मसीह के राजत्व में विश्वासियों के साथ उसका संयोजन, मसीह के साथ हमारा संयोजन जिसके फलस्वरूप वह अपनी आशीषों को हमारे साथ बांटता है।

मसीह के साथ संयोजन

पौलुस के अनुसार जब हम यीशु में विश्वास करते हैं तो हम रहस्यात्मक, आत्मिक रूप में उससे जुड़ जाते हैं। और क्योंकि हम यीशु से जुड़े हुए हैं, तो हमें ऐसा माना जाता है जैसे कि हम यीशु हों। उदाहरण के तौर पर, यीशु परमेश्वर के समक्ष निष्कलंक है, और क्योंकि हम उससे जुड़े हुए हैं इसलिए हम हमारे सभी पापों की क्षमा के साथ परमेश्वर के समक्ष निष्कलंक गिने जाते हैं।

पौलुस अपने कारवास की पत्रियों में बार-बार इस धारणा की ओर मुड़ा जब उसने अपने पाठकों को उत्साहित किया कि वे मसीह के राजत्व में सहभागी थे। प्राय: उसने इस बात को दर्शाया कि क्योंकि विश्वासी मसीह के राजत्व में सहभागी हैं, वे मसीह के राज्य की वर्तमान निरंतरता के दौरान आशीष प्राप्त करते हैं, और परमेश्वर के राज्य की स्थापना के समय और भी अधिक आशीषों की अपेक्षा करते हैं।

उदाहरण के लिए कुलुस्सियों 3:1-4 में पौलुस ने लिखा :

> सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है... क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे। (कुलुस्सियों 3:1-4)

मसीह के साथ हमारे संयोजन से हम मसीह की मृत्यु से भी जुड़ गए हैं, जिससे हम भी उसके साथ मर गए। और हम मसीह के साथ उसके पुनरुत्थान और जीवन में भी जुड़ गए हैं, जिससे हम उसके साथ जी उठे। हम मसीह के साथ उसके स्वर्गारोहण और राजत्व में भी जुड़ गए हैं, जिससे जब वह अपनी महिमा में लौटेगा तो हम उसके साथ राज्य करेंगे।

जिस प्रकार पौलुस ने इफिसियों 2:6-7 में लिखा :

> (परमेश्वर ने) मसीह यीशु में हमें उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। (इफिसियों 2:6-7)

पौलुस के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड पर उसके वर्तमान राजत्व में उससे जुड़े होने के द्वारा अभी भी हम स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ बैठे हुए हैं। फलस्वरूप, हम इसी समय आत्मिक रूप से उसके सम्मान और आशीषों में भागी हैं, चाहे हमारी सांसारिक परिस्थितियां इसे प्रदर्शित न करती हों। और जब यीशु का पुनरागमन होगा तो हमारी आत्मिक आशीषें बढ़ जाएंगी, और हमें इस पृथ्वी की आशीषें भी प्राप्त होंगी।

परन्तु पौलुस ने उन विषयों के बारे में बात करने के लिए मसीह के साथ हमारे संयोजन की अपील की जो सुखदायक नहीं हैं, जैसे कष्ट सहना। पौलुस ने मसीह के साथ हमारे संयोजन की बात विश्वासियों को इस बात से उत्साहित करने के लिए की कि उन्होंने अकेले कष्ट नहीं सहा, और न ही उन्होंने व्यर्थ में कष्ट सहा है। हम पहले ही देख चुके हैं कि पौलुस के जीवन में ऐसा ही हुआ था। परन्तु पौलुस ने यह भी लिखा कि उसके पाठकों के जीवन में भी ऐसा ही होगा।

कुलुस्सियों 1:24 में उसके शब्दों को सुनें :

> अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिये उठाता हूँ, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ।

मसीही जीवन कठिन हो सकता है और इसमें अनेक कष्ट शामिल हो सकते हैं।

यद्यपि हमारा राजा स्वर्ग में राज्य करता है, अभी तक उसने अपने सभी शत्रुओं का नाश नहीं किया है, और वे शत्रु प्राय: अपनी शक्तियों का प्रयोग हमारे विरुद्ध करते हैं। परन्तु पौलुस ने इस बात से राहत प्राप्त की कि जब हम सुसमाचार के लिए कष्ट सहते हैं तो मसीह के साथ हमारा संयोजन इस बात की पुष्टि करता है कि मसीह हमारे साथ कष्ट सहता है और सहानुभूति प्रकट करता है। पौलुस ने यह जानकर भी राहत प्राप्त की कि राजा मसीह के साथ हमारे संयोजन के द्वारा हमारे कष्ट मसीह के राज्य अर्थात् कलीसिया में दूसरों को लाभ पहुंचाते हैं। अंत में, उसने सिखाया कि हमारे कष्ट मसीह के पहले से नियुक्त कष्टों को पूरा करते हैं और जिसके द्वारा हमारे राजा के विजयी पुनरागमन के मंच को तैयार करते हैं।

इस प्रकार के कारणों से, पौलुस की कारावास की पत्रियों ने समान रूप से मसीह के साथ संयोजन के विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया। पौलुस के लिए सृष्टि के राजा के साथ हमारा संयोजन हमारे उद्धार में बड़े भरोसे, मुश्किल के समय में बड़े उत्साह और भविष्य में बड़ी आशा का स्रोत था।

पौलुस के इस विचार कि यीशु मसीह सृष्टि का राजा है और उसके राजत्व में विश्वासियों के मसीह के साथ संयोजन, को जांचने के पश्चात् हमें कारावास की पत्रियों की धर्मविज्ञानीय एकता के अंतिम बिंदू की ओर मुड़ना चाहिए, अर्थात् नैतिक जीवन की आवश्यकता जो मसीह के राजत्व और उसके साथ हमारे संयोजन में निहित होता है।

नैतिक जीवन

जो पौलुस के लेखनों से परिचित हैं वे जानते हैं कि पौलुस ने नैतिक मसीही जीवन के बारे में शिक्षा देने में उतना ही समय व्यतीत किया जितना उसने धर्मशिक्षा-संबंधी विषयों को संबोधित करने में लगाया। वास्तव में, लगभग हर समय जब उसने किसी धर्मशिक्षा-संबंधी विषय का परिचय दिया तो उसने यह भी स्पष्ट किया कि किस प्रकार विश्वासियों को अपने जीवन में उस धर्मशिक्षा को लागू करना है। और इस बात को लागू करना एक सही विचारधारा और सही धर्मशिक्षा तक ही सीमित नहीं था। इसमें विश्वासियों की भावनाएं और व्यवहार भी शामिल हुए। पौलुस यहां तक आगे बढ़ा कि उसने कहा कि जब तक धर्मशिक्षा को इस प्रकार से लागू नहीं किया जाता जिससे यह हमारी भावनाओं और व्यवहारों को बदल दे तो यह हमारे लिए व्यर्थ ही होगी।

1कुरिन्थियों 13:2 में इस विषय पर पौलुस के शब्दों को सुनें :

> और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं। (1कुरिन्थियों 13:2)

यदि हम सब रहस्यों को समझ लें और सारा ज्ञान प्राप्त कर लें तो हम सब विषयों में परमेश्वर के प्रकाशन के सिद्ध ज्ञान को प्राप्त कर लेंगे। दूसरे शब्दों में हमारे पास सिद्ध धर्मशिक्षा होगी। परन्तु अच्छी धर्मशिक्षा, यहां तक कि सिद्ध धर्मशिक्षा, पर्याप्त नहीं है। यदि वह धर्मशिक्षा हमारे जीवन को परिवर्तित नहीं करती — यदि यह प्रेम के साथ जुड़ी नहीं होती, यदि इसका परिणाम दूसरों के साथ नैतिक व्यवहार और मसीह की आदरपूर्ण आज्ञाकारिता नहीं होता — तो यह हमारे लिए व्यर्थ है।

अत: यह हमारे लिए आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि पौलुस की कारावास की पत्रियां निरंन्तर नैतिक जीवन पर बल देती हैं। एक ओर यह तथ्य कि मसीह राजा है, उसकी आज्ञा मानने के लिए हमें प्रेरित करता है। दूसरी ओर यह तथ्य कि हम मसीह के साथ जुड़े हुए हैं, हमें प्रेरित करता है कि हम उसके चरित्र के अनुसार जीवन जीएं। आइए पहले हम नैतिक रूप से जीवन जीने, जो मसीह के राजत्व से निकलता है, के दायित्व पर ध्यान दें।

राजा के रूप में मसीह

जैसा हम पहले कह चुके हैं, क्योंकि मसीह राजा है इसलिए वह सर्वोच्च है। अर्थात् उसके पास वैध अधिकार है कि वह हमें आज्ञा मानने का आदेश दे। अत: इसका अर्थ है कि उसकी आज्ञा मानना हमारा वैध दायित्व है।

और जैसा हम कह भी चुके हैं, मसीह सिद्ध रूप से धर्मी और न्यायी राजा है। और इसका अर्थ है कि उसके न्याय और उसकी आज्ञाएं पूर्ण रूप से नैतिक हैं, अत: उसकी आज्ञा मानना हमारा नैतिक दायित्व है। क्योंकि मसीह सर्वोच्च और न्यायी है, तो उसकी हर आज्ञा को मानना हमारा वैध और नैतिक दायित्व है।

इसी प्रकार का तर्क पौलुस ने फिलिप्पियों 2:9-12 में दिया था जहां उसने ये शब्द लिखे :

> परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें... सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। (फिलिप्पियों 2:9-12)

यीशु स्वर्ग में, पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे पाई जाने वाली प्रत्येक चीज पर शासक और प्रभु है। दूसरे शब्दों में, वह सृष्टि का राजा है। और मसीह के राजत्व के आधार पर पौलुस ने फिलिप्पियों को मसीह की आज्ञा मानने के लिए उत्साहित किया।

इससे बढ़कर, जैसा हम देख चुके है, मसीह के राजत्व में उसका सम्मान भी शामिल होता है। इसी प्रकार, पौलुस ने यह भी तर्क दिया कि मसीहियों को अपने राजा के सम्मान के लिए उसके प्रति आदर के साथ पवित्र जीवन जीना आवश्यक है। एक ओर तो मसीह की आज्ञा मानना उसकी प्रतिष्ठा को बनाए रखता है। दूसरी ओर, क्योंकि मसीह पवित्र और धर्मी और सम्मानयोग्य है, इसलिए वह योग्य है कि उसकी आज्ञा मानी जाए।

पौलुस ने यह कहते हुए फिलिप्पियों 1:27 में ऐसा लिखा :

> तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो। (फिलिप्पियों 1:27)

और कुलुस्सियों 1:10 में उसने ऐसा लिखते हुए अपने पाठकों को उत्साहित किया :

> ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे। (कुलुस्सियों 1:10)

पौलुस इस बात से काफी चिंतित था कि मसीह का सम्मान और प्रतिष्ठा सुरक्षित और बनी रहे, और उसने यह भी दर्शाया कि विश्वासी इसे तब पूरा करते हैं जब वे भले कार्य करते हैं, अर्थात् जब वे प्रभु की आज्ञाओं को मानते हैं।

कारावास की सभी पत्रियों में पौलुस ने अपने पाठकों को मसीह की आज्ञा मानने और सोचने, महसूस करने और सही व्यवहार करने के लिए प्रभु की आज्ञाओं का अनुसरण करने के द्वारा नैतिकतापूर्ण जीवन जीने हेतु उत्साहित किया। और यद्यपि उसने मसीह के राजत्व के साथ संबंध को विशिष्ट रूप से सदैव नहीं दिखाया, परन्तु उसने प्राय: पर्याप्त रूप से स्पष्ट किया कि मसीह का राजत्व भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए हमारी एक मूलभूत प्रेरणा हो।

यह सिखाने के अतिरिक्त कि मसीहियों को नैतिकता पूर्ण जीवन जीना चाहिए क्योंकि मसीह राजा है, पौलुस ने स्पष्ट किया कि क्योंकि हम मसीह से जुड़े हुए हैं, तो हमारा यह दायित्व है और हमें यह सामर्थ भी प्रदान की गई है कि हम उसके चरित्र और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीएं।

मसीह के साथ संयोजन

मसीह के साथ हमारा संयोजन कम से कम तीन कारणों से हमें नैतिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करता और योग्य बनाता है। पहला, मसीह अपने आत्मा के साथ हम में वास करता है और इसके द्वारा हमें नया स्वभाव देता है एवं हमें भले कार्य करने को विवश करता है। आत्मा के हमारे भीतर वास करने का एक परिणाम यह होता है कि हमारे स्वभाव मसीह के स्वभाव के समान बन जाते हैं। फलस्वरूप, हम परिवर्तित हो जाते हैं और मसीह की आज्ञा मानने के प्रति प्रेरित होते हैं। इन सब में परमेश्वर हमें अपने प्रति समर्पित करवाने और मसीह के सदृश्य बनाने के लिए हमारे भीतर कार्य करता है।

सुनें फिलिप्पियों 2:12 13 में पौलुस ने किस प्रकार इन विषयों के बारे में बात की :

> डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। (फिलिप्पियों 2:12-13)

मसीह के साथ हमारे संयोजन में परमेश्वर के आत्मा का हमारे भीतर बसा होना शामिल होता है। और पवित्र आत्मा हमारी इच्छाओं को प्रेरित करता है और हमें विवश करता है कि हम परमेश्वर की आज्ञाकारिता में कार्य करें ताकि हम सही और नैतिक रूप से जीएं।

पौलुस ने कुलुस्सियों 3:5-10 में ऐसा ही तर्क दिया :

> अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं... क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। (कुलुस्सियों 3:5-10)

क्योंकि हम मसीह से जुड़े हुए हैं इसलिए हमारे पास नए स्वभाव हैं। और क्योंकि परमेश्वर ने हमें नए स्वभाव दिए हैं इसलिए हमारा यह केवल दायित्व ही नहीं है बल्कि हमें सामर्थ भी प्रदान की जाती है कि हम भले कार्य करने और पाप करने की परीक्षा का विरोध करने के द्वारा उसका प्रयोग करें।

दूसरा, परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी है कि जो उसके पुत्र से जुड़े हुए हैं उन्हें पवित्र जीवन जीना आवश्यक है। वास्तव में, परमेश्वर ने हमें केवल आज्ञा ही नहीं दी है। उसने हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों को पूर्वनिर्धारित किया हुआ है।

पौलुस ने इस विषय पर इफिसियों 2:10 में लिखा, जहां उसने सिखाया :

> क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया। (इफिसियों 2:10)

हम मसीह यीशु में रचे गए हैं, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु के साथ संयोजन के द्वारा उद्धार प्रदान किया है। और उसका एक कारण यह था कि उसने हमारे लिए भले कार्यों को नियुक्त किया है।

तीसरा, क्योंकि हम सब मसीह से जुड़े हुए हैं इसलिए हम मसीह के माध्यम से एक-दूसरे से भी जुड़े हुए हैं। यह हमें प्रेरित करता है कि हम एक दूसरे से भी वैसा ही व्यवहार करें जैसा स्वयं मसीह से करते हैं, और जैसा हम चाहते हैं कि दूसरे हमसे व्यवहार करें।

जिस प्रकार पौलुस ने इफिसियों 4:25 में लिखा :

> इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं। (इफिसियों 4:25)

पौलुस का तर्क यह था कि हम मसीह में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और यह एकता हमें एक-दूसरे से आदर के साथ व्यवहार करने को प्रेरित करती है, एक-दूसरे के विरुद्ध पाप करते हुए नहीं बल्कि सबकी भलाई के लिए कार्य करते हुए।

जैसा उसने फिलिप्पियों 2:1-3 में लिखा :

> यदि मसीह में... प्रेम से ढाढ़स है... दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। (फिलिप्पियों 2:1-3)

कम से कम इन तीन कारणों — हमारे नए स्वभाव, परमेश्वर की आज्ञा और एक-दूसरे के साथ हमारे संयोजन — से मसीह के साथ हमारा संयोजन नैतिक रूप से जीने के लिए हमें प्रेरित करता और योग्य बनाता है, और यह उस स्तर के अनुसार होता है जो परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में हमारे लिए रखा है।

अत: हम देखते हैं कि पौलुस की कारावास की पत्रियां संपूर्ण सृष्टि पर मसीह के राजत्व पर आधारित पौलुस की महत्वपूर्ण और बहुमुखी धर्मशिक्षा के द्वारा धर्मविज्ञानीय रूप से परस्पर जुड़ी हुई हैं, जिसमें मसीह के साथ विश्वासियों का संयोजन और नैतिक रूप से जीने का हमारा उत्तरदायित्व भी शामिल होते हैं।

जैसा कि हम आने वाले अध्यायों में देखेंगे, पौलुस के कारावास की पत्रियों में और भी कई समान विषय पाए जाते हैं। परन्तु इन अधिकांश समान विषयों को आपस में बांधने वाली धर्मशिक्षा यह है कि यीशु मसीह सृष्टि का राजा है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने उन परिस्थितियों को जांचा है जिन्होंने पौलुस की कारावास की पत्रियों को प्रेरित किया था, एवं उस आधारभूत धर्मविज्ञानीय धारणा को भी जिसका प्रयोग पौलुस ने इन पत्रियों में किया था। हमने उन घटनाओं की समीक्षा भी की है जिन्होंने उसकी गिरफ्तारी और फिर कारावास को प्रेरित किया, और फिर हमने कारागृह में पौलुस की सुचारु सेवकाई पर भी ध्यान दिया है। अंत में, हमने उस मुख्य धर्मविज्ञानीय विषय का परिचय दिया है जो कारावास से लिखी पौलुस की सभी पत्रियों को जोड़ती हैं, अर्थात् वह धर्मशिक्षा कि यीशु मसीह सृष्टि का राजा है।

पौलुस की कारावास की पत्रियां धर्मविज्ञान से भरपूर हैं और आज की कलीसिया को निर्देश देने और उत्साहित करने के लिए बिल्कुल सटीक हैं। आगामी अध्यायों में हम इन पत्रियों को और भी अधिक बारीकी से देखेंगे। और जब हम ऐसा करते हैं, तो हम इस पृष्ठभूमि को जिसका अध्ययन हमने इस अध्याय में किया है, को मन में रखेंगे।

पौलुस द्वारा कारावास में सही गई कठिनाइयों और उसके द्वारा वहां निरन्तर की गई सेवा की जानकारी हमें कुलुस्से, इफिसुस और फिलिप्पी की कलीसियाओं को पत्र लिखने में पौलुस के अभिप्रायों और लक्ष्यों को समझने में सहायता करेगी। और उन धर्मविज्ञानीय विषयों को समझना जो इन सब पत्रियों को संयोजित करता इन प्रत्येक कलीसियाओं को दिए गए पौलुस के विशेष निर्देशों को समझने में हमारी सहायता करेगा। इन विचारों को मन में रखते हुए हम पौलुस की शिक्षाओं को समझने और उन्हें अपने जीवनों और कलीसियाओं में लागू करने के लिए बेहतर रूप से तैयार होंगे।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org